चन्दामामा
सितंबर १९९५
Rs
5
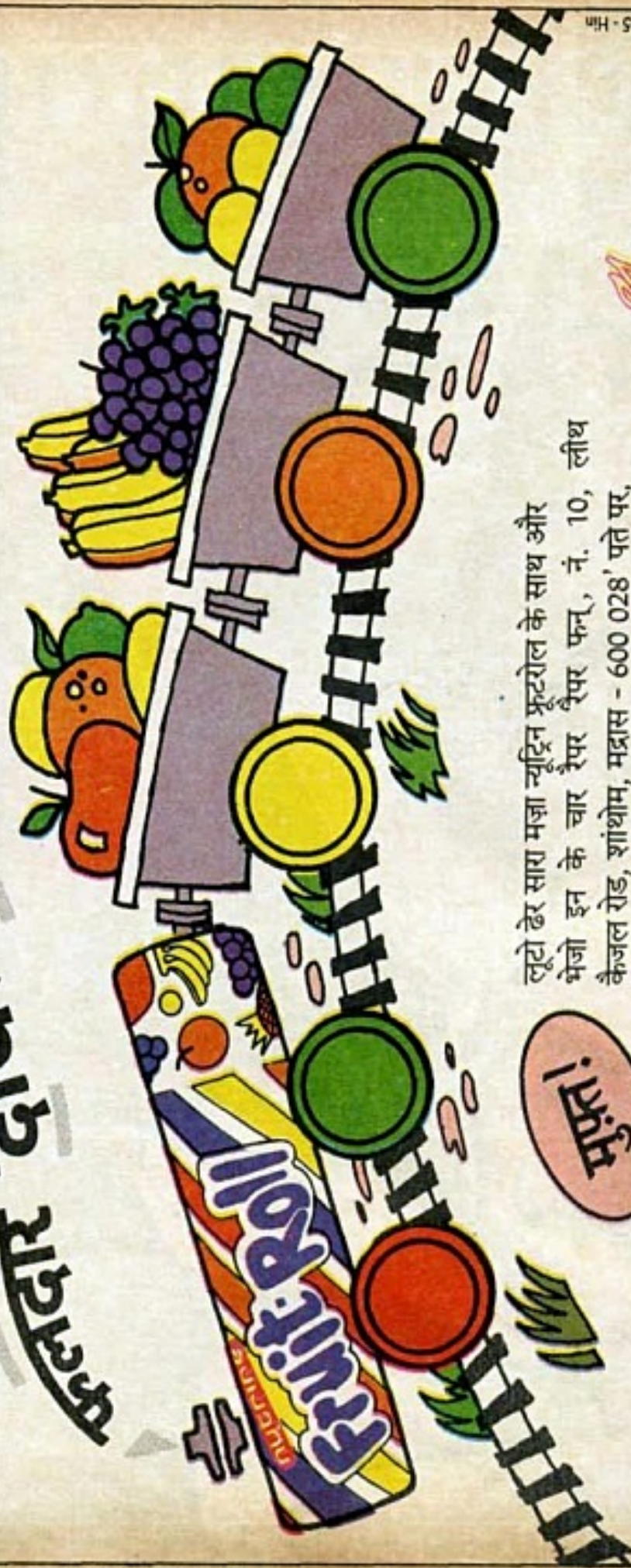
न्यूट्रीन
फलदार दावत!
nutrine
Fruit Roll
मुफ़्त!
लूटो ढेर सारा मज़ा न्यूट्रिन फ्रूटरोल के साथ और
भेजो इन के चार रैपर 'रैपर फन्, नं. 10, लीथ
कैजल रोड, शांथोम, मद्रास - 600 028' पते पर,
पाने के लिए एक मुफ़्त टाइम टेबल!
इस पेशकश के बिना भी न्यूट्रिन स्वीट्स उपलब्ध हैं।
nutrine
HARMONY - T81/95 - Hin

चन्दामामा

सितंबर १९९८

एक प्रति : ५.००

वार्षिक चन्दा : ६०.००

BACK TO SCHOOL WITH CHELPARK
chelpark
WATER
COLOURS
chelpark
chelpark
WAX CRAYONS
chelpark
Mopples Colour Set
chelpark
CHELPARK RANGE OF PRODUCTS
WAX CRAYONS, WATER COLOUR CAKES, PEN, PENCIL, INK, OIL PASTELS, MOPPLES COLOUR SET, WATER COLOUR SET.
CHELPARK COMPANY PVT. LTD.
A-93, Industrial Estate, Rajajinagar,
Phone: 91-080-3351562/3351694
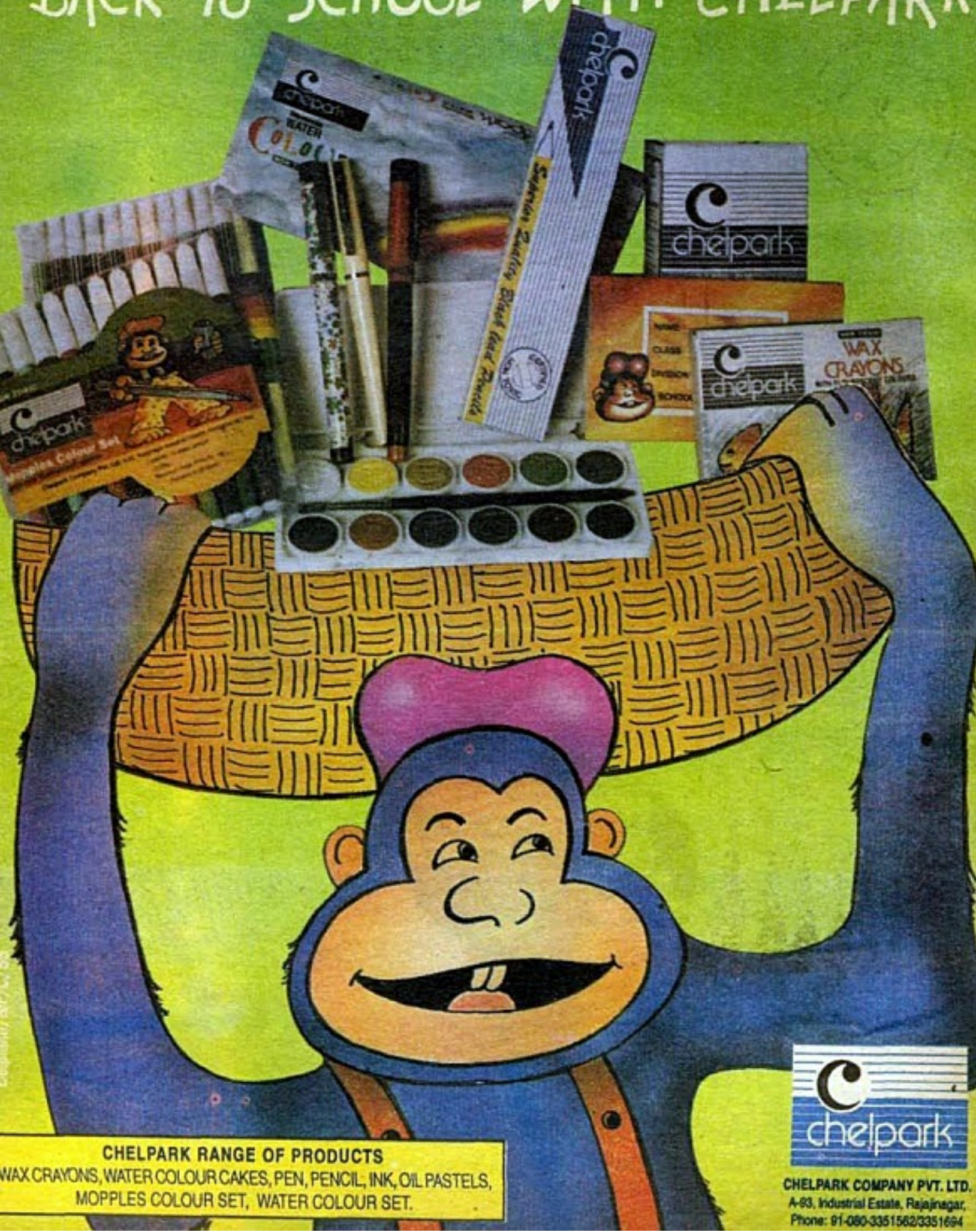
चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

महत्वपूर्ण निर्णय

देश की राजधानी दिल्ली और केरल राज्यों में राज्य-सरकारों ने दो महत्वपूर्ण निर्णय लिये। ये निर्णय बच्चों से संबंधित हैं। इसलिए इनके संबंध में सोच-विचार करना आवश्यक भी है। दिल्ली राज्य के आदेश के अनुसार उन-उन सड़कों पर भारी वाहन आ-जा नहीं सकते, जहाँ एक पाठशाला से अधिक पाठशालाएँ हों। कम से कम पाठशाला के कार्य-काल में भारी वाहनों का आवागमन नहीं हो सकता।

देश की राजधानी जुड़वाँ नगर है। दिल्ली और नयी दिल्ली के नाम से विभाजित है। दिल्ली नगरपालिका निगम के अधीन है नगर का प्रशासन। नगरपालिका कमेटी नयी दिल्ली का प्रशासन संभालती है। तुलना में पुराने दिल्ली नगर में जगह-जगह पर पाठशालाएँ हैं। नयी दिल्ली में पाठशालाएँ एक-दूसरे के इतने नजदीक नहीं है और इसकी सड़कें भी विशाल हैं। नगर के कुछ नागरिक नगरपालिका प्रशासन के विरुद्ध अदालत गये। उच्च न्यायालय ने अपने फ़ैसले में नगरपालिकाओं को आदेश दिया कि पाठशालाओं की परिधि में भारी वाहनों के आवागमन की अनुमति ना दें। इससे प्रदूषण तथा दुर्घटनाएँ टाली जा सकती हैं। अदालत ने अपने फैसले में ज़ोर दिया कि इससे पर्यावरण संबंधी प्रदूषण से लोगों की, खासकर बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा हो सकती है।

केरल की सरकार ने ही स्वयं आदेश ज़ारी किया कि स्कूलों तथा कालेजों की परिधि में धूम्रपान निषिद्ध है। उसने अपने आदेश में यह भी कहा कि इस अनुशासन को तोड़नेवाले को कड़ी सी कड़ी सज़ा दी जायेगी। उम्र में बड़े कुछ विद्यार्थी धूम्रपान करते हुए दिखायी देंगे। किन्तु उन अध्यापकों को दृष्टि में रखकर यह आदेश निकाला गया, जो स्कूलों में भी धूम्रपान करते रहते हैं। शायद वे विद्यार्थियों के सामने धूम्रपान ना करते हों पर वे अपने सहयोगियों के साथ अध्यापकों के लिए सुरक्षित कमरे में तो पीते हैं। केरल सरकार चाहती है कि अध्यापक विद्यार्थियों के लिए एक आदर्श बनें। इस आदेश का उद्देश्य यही हैं।

इन दोनों निर्णयों को बाक़ी राज्य-सरकारें भी अमल में लायें तो अच्छा होगा।

वर्ष : ४९ | सितंबर १९९५ | अंक : १

एक प्रति : रु. ५/- | वार्षिक चन्दा : रु ६०/-

समाचार - विशेषताएँ

अंतरिक्ष में हाथ मिलाया

सोवियत रूस ने अंतरिक्ष में 'मीर' स्पेस स्टेशन का निर्माण किया। अमेरीका का भेजा हुआ स्पेस षटिल 'अट्लांटिस' जून २९ को उससे जुड़ गया।

ऐसा अद्‌भुत 'डाकिंग' (जुडना) पिछले बीस सालों में दूसरी बार हुआ। १९७५, जुलाई में अमेरीका की व्योम नौका 'अपोलो' सोवियत व्योयनौका सोयुज से जा मिली। उन दिनों दोनों देशों के बीच प्रच्छन्न युद्ध चल रहा था। इस वजह से इस घटना का राजनैतिक महत्व अत्यधिक ना रहा। किन्तु यह मिलन आवश्यक तकनीकी विज्ञान की प्राप्ति का साधन अवश्य बना। सोवियत यूनियन के अलग-अलग राज्यों में बेंट जाने के बाद अमेरीका से उसकी शत्रुता ख़तम हो गयी। दोनों देशों ने दोस्ती का हाथ बढ़ाया। फलस्वरूप अंतरिक्ष में लगभग पंद्रह देश आपस में मिल सकते हैं। इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय स्पेस स्टेशन का निर्माण हुआ। साथ-साथ अनेकों योजनाओं को रूप देने के सफल प्रयत्न भी किये जा रहे हैं।

सात व्योमगामियों को लेकर 'अट्लांटिस' जून २७ को निकली। दो दिनों तक वह 'मीर' के साथ-साथ घूमती रही। इससे 'डाकिंग' याने जुड़ना संभव हो पाया। जून २९ को जब ये दोनों जुड़ गयीं, तब बड़ी व्योयनौका के रूप में दिखने लगीं। होस्टन से, कालिनिकग्राड से याने भूमि से व्योमगामियों को संकेत भेजे गये कि वे 'मीर' में प्रवेश करें। इन संकेतों को भेजने में अंतरिक्ष वैज्ञानिकों को दो घंटे लगे। इसके बाद दोनों व्योमगामियों ने हाथ मिलाये और एक दूसरे के गले मिले।

मध्य एशिया के रूस और मंगोलिया की सरहदों की रेखा के पार अंतरिक्ष में लगभग २४५ मीलों से दूर यह 'डाकिंग' संभव हुआ। नित्संदेह ही यह 'डाकिंग' पूर्ण व तृटिहीन रहा। वे दोनों नौकाएँ उस समय क्षण में पाँच मीलों की गति से यात्रा कर रही थीं। 'अट्लांटिस' की लंबाई १२२ फुट है तो 'मीर' की लंबाई है ११२ फुट। ये दोनों जब जुड़ गयीं तब अमेरीका के कमांडर काप्टन गिब्ब ने बहुत ही प्रफुल्लित होकर कहा "हमने पकड़ लिया।"

इसके बाद पाँच दिनों तक 'मीर' में तरह-तरह के प्रयोग हुए। 'मीर' के नार्मन थागार्ड के साथ तीन व्योयगामी लौटने 'अटलांटिस' में पहुँचे। पहुँचने के बाद दो व्योयगामी 'सोयोज' में पहुँचे और दोनों के अलग-अलग हो जाने के फोटो खींचे। फिर उन्होंने 'मीर' में जाने के दृश्यों का फोटो खींचा। 'अटलांटिस' वहाँ से निकल पड़ी और जुलाई सात को भूमि पर पहुँची।

इस ऐतिहासिक 'डाकिंग' को टी.वी. पर देखकर अमेरीकी अध्यक्ष बिल क्लिंटन ने कहा "देखा, हम दोनों देशों के बीच अब कोई वैर नहीं है।"
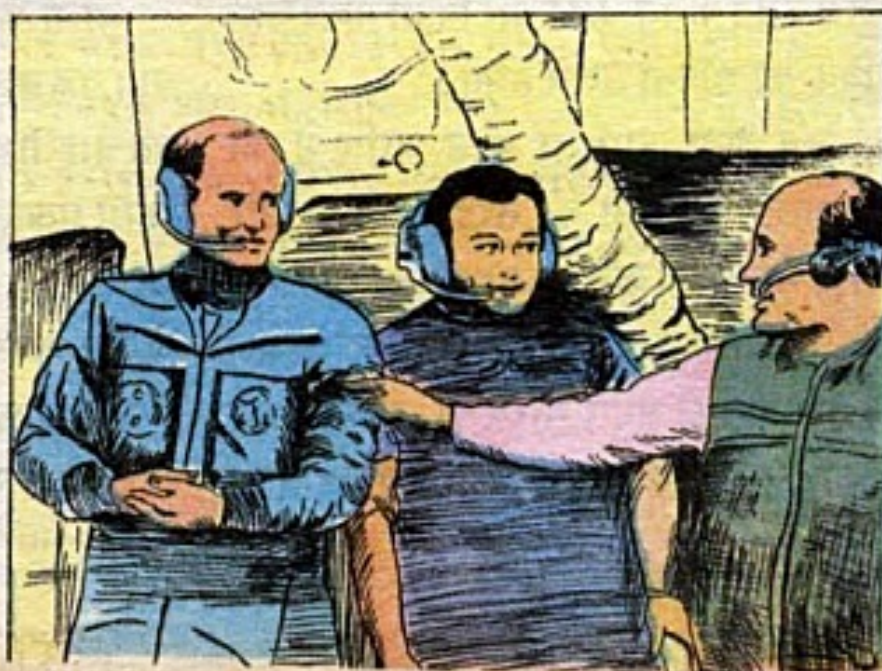
बहादूर की हार

दंडकारण्य के किसी एक प्रदेश में भील जाति के कुछ लोग रहते थे। उनका सरदार था सिंहबल। उसके नेतृत्व में सब भील बड़ी ही एकता के साथ रहा करते थे। उनमें झगड़े-फसाद होते ही नहीं थे।

सिंहबल वृद्ध हो गया। एक समय था, छोटा छुरा लेकर उसने बाघ का सामना किया और बड़ी ही आसानी से उसे मार डाला। लेकिन आज उसे चलने के लिए लाठी का सहारा चाहिये। अतः सिंहबल ने निर्णय किया कि भील जाति के नेतृत्व का भार किसी समर्थ भील युवक को सौंपना उत्तम होगा।

सच कहा जाए तो भील जाति में जो बलशाली हो, उसी को सरदार बनाया और माना जाता था। कोई भी सरदार बनने के लिए स्पर्धाओं में भाग ले सकता था। चूँकि सिंहबल के प्रति सबको अपार गौरव था, इसलिए अब तक किसी ने भी सरदार बनने का दावा नहीं किया; होड़ में भाग लेने का अपना इरादा प्रकट नहीं किया।

सिंहबल के अपने बेटे नहीं थे। इकलौती बेटी मात्र थी। मल्लिका उसका नाम था। वह बड़ी ही सुँदरी थी। सरदार का बेटा ना हो तो भीलों की परिपाटी के अनुसार सरदार बननेवाले के साथ उसे विवाह करना है। स्पर्धाओं में विजयी होना कठिनतम कार्य था, फिर भी कितने ही भील युवकों ने मल्लिका से विवाह रचाने के सपने देखे थे।

भीलों की बस्ती में रवि नामक एक युवक था। वह बलवान था और सुँदर भी। मल्लिका उसे चाहती थी। मौक़ा मिलने पर दोनों मिलकर किसी एकांत प्रदेश में बैठकर बातें भी किया करते थे।

एक शुभ दिन पर सिंहबल ने घोषणा की कि भीलों का सरदार बनने के लिए स्पर्धाओं का शीघ्र ही आयोजन होगा और इन स्पर्धाओं में

विनय गुप्ता

भाग लेने के लिए बलवान भील युवक सन्नद्ध हों। उसने अपने घोषणा-पत्र में यह भी बताया कि इन स्पर्धाओं में जो विजयी होगा, उसके साथ उसकी बेटी की शादी भी होगी।

यह घोषणा सुनते ही रवि को लगा मानों मैंने मल्लिका को पा ही लिया। उसे अपने बल पर अटूट विश्वास था। उसे विश्वास था कि बाक़ी युवकों को अवश्य ही हराऊँगा।

उसी बस्ती में शिखिमुखी नामक एक युवक था। उसका पिता मर गया था। माता चामुंडी जीवित थी। उस बस्ती के सब लोगों ने सिंहबल की अच्छाई ही देखी और जानी, किन्तु वही एक स्त्री थी, जिसने उसकी क्रूरता भी देखी थी।

चामुंडी का पति था भद्रबल। महाबली सिंहबल जब पहले-पहल भीलों का नायक बना तब पता लगाया, खोजबीन की कि भीलों में से कौन ऐसा है, जो उससे टक्कर लेने का सामर्थ्य रखता है, उसके नेतृत्व को चुनौती दे सकता है। तब उसे भद्रबल के बारे में मालूम हुआ। सिंहबल को लगा कि भद्रबल जैसे बलवान की उपेक्षा की जाए, नज़रअंदाज़ किया जाए तो भविष्य में उसके पद को ख़तरा पैदा हो सकता है। उसने मन ही मन उसको अपने रास्ते से हटाने का निश्चय किया और एक दिन रहस्यपूर्वक उसे मरवा ड़ाला।

उस समय भद्रबल का बेटा शिखिमुखी पाँच साल का था। चामुंडी को मालूम हुआ कि उसके पति की हत्या सिंहबल ने करवायी। एक दिन वह उससे एकांत में मिली और बोली "सिंहबल, जिस नेतृत्व को सुरक्षित रखने के लिए तुमने मेरे पति की हत्या करवायी, उसी नेतृत्व को एक दिन मेरा बेटा शिखिमुखी अपने हस्तगत करेगा। यह मेरी प्रतिज्ञा है। "सिंहबल अपनी मूँछों पर ताव देता हुआ बोला" यह असंभव है। सहारे के अभाव में तुम्हारा बेटा भीलों का सरदार कैसे बनेगा? बेसहारा वह कर भी क्या लेगा?" उसकी बातों में व्यंग्य कूटकूटकर भरा हुआ था।

बाद तो सिंहबल ने चामुंडी की बात ही भुला दी। किन्तु चामुंडी सिंहबल की क्रूरता के शिकार बने अपने पति की मौत को भूल नहीं पायी। शिखिमुखी को भीलों का सरदार बनाने के लिए उसने कठोर परिश्रम किया। उसका

आग्रह व प्रतिज्ञा व्यर्थ नहीं हुए। देखते-देखते शिखिमुखी तलवार, भाल, बाण चलाने में प्रवीण हुआ। लाठी चलाने और मल्लयुद्ध के गुर भी उसने सीखे। पर वह हमेशा इस बात में जागरूक रहा कि उसके बल व वीरता के बारे में और लोग ना जानें। ऐसा होने पर चामुंडी को भय था कि कहीं अपने पिता की तरह बेटा भी सिंहबल के हाथों मारा ना जाए। इसलिए उसने भी बड़ी ही सावधानी बरती।

बस्ती की भील जाति के सब लोग काली माता की पूजा करते थे। हर साल उत्सव होता था। सिंहबल ने निर्णय किया कि उस उत्सव के दिन पर ही नये सरदार का चुनाव हो। उसके पहले दिन उसने स्पर्धाओं का प्रबंध किया।

वे स्पर्धाएँ तीन प्रकार की होती थीं। पहला था - शारीरिक बल संबंधी मल्ल-युद्ध, दूसरा था - साहस से संबंधित। इसमें छोटे छुरे से बाघ के साथ लड़ना होगा। तीसरा था - धनुर्विद्या से संबंधित। देवी की मूर्ति के सामने थालियों में हल्दी व कुंकुम रखे जाते थे। बाण ऐसा चलाना होगा कि थालियाँ ना हिलें, किन्तु उन थालियों में रखे गये हल्दी और कुंकुम देवी की मूर्ति पर बिखर जाएँ।

होड़ में भाग लेने आये हुए युवकों को सिंहबल ने दो दलों में बाँटा। पहले मल्ल-युद्ध हुए। प्रथम दल में रवि, द्वितीय दल में शिखिमुखी विजेता घोषित हुए। दूसरी स्पर्धा में रवि और शिखिमुखी दोनों एक छोटा -सा छुरा लेकर बाघ से लडने उसके कटघरे के अंदर गये। रवि और शिखिमुखी दोनों घायल तो हुए, पर वे बाघ को मार सके।

तीसरी स्पर्धा थी, धनुर्विद्या। सिंहबल ने घोषणा की कि यह स्पर्धा उत्सव के दिन संपन्न होगी।

बाघ से लड़ने के बाद रवि ने, शिखिमुखी के बारे में पता लगाया। तब उसे उसके सहास, वीरता आदि के बारे में विशद रूप से मालूम हुआ। धनुर्विद्या में रवि की योग्यता इतनी कोई ख़ास नहीं थी। इसलिए उसके हार जाने की संभावना थी। तब शिखिमुखी ही अवश्य सरदार बनेगा। अलावा इसके, जिस मल्लिका को उसने चाहा, उसे खोना पड़ेगा।

रवि मन ही मन बहुत व्याकुल हुआ। उसने उसी रात को अपना संदेह मल्लिका से बताया। उसने मल्लिका से कहा "अब तक मैं जान नहीं पाया कि शिखिमुखी जैसा महावीर हमारी ही बस्ती में रहता है। धनुर्विद्या में शायद ही मैं उसे जीत पाऊँगा।"

मल्लिका यह सुनकर रोने लगी। उसने कहा "तुमसे अगर मेरी शादी नहीं होगी तो आत्महत्या कर लूँगी। किसी और से शादी करने का सवाल ही नहीं उठता।"

दोनों ने आपस में अच्छी तरह से चर्चाएँ कीं और उसी रात को वे शिखिमुखी से मिले। रवि ने, शिखिमुखी से अपने प्रेम की बात बतायी और उससे गिड़गिड़ाया कि कैसे भी हो, मेरी शादी मल्लिका से ही हो। मल्लिका ने उसके पाँव छुये और कहा "भैया, अपनी बहन की इच्छा पूरी करो।" वह धीरे-धीरे रो भी रही थी।

तब शिखिमुखी ने रवि से कहा "रवि, तुम दोनों ने मेरे लिए बड़ी ही जटिल समस्या खड़ी कर दी। यह तो मेरे लिए कठोर परीक्षा है। इस स्पर्धा में जीतना मेरे जीवन का ध्येय है, मेरे जीवन का आशय है। वही मेरी माता की भी तीव्र इच्छा है। किन्तु ईमानदारी से मेरे एक सवाल का जवाब दो। भीलों का सरदार बनना चाहते हो या मल्लिका से विवाह। इन दोनों में से तुम क्या चाहते हो?" तक्षण ही रवि ने कहा "भीलों का नेतृत्व मेरे लिए तिनके के समान है। मैं हृदयपूर्वक मल्लिका को ही अपना बनाना चाहता हूँ।"

"तुम्हारी ईमानदारी और सच्चाई मुझे बहुत अच्छी लगीं।" कहकर उसने मल्लिका को भेज दिया। फिर उसने धनुर्विद्या संबंधी कुछ बारीकियाँ रवि को बतायीं। रवि ने शिखिमुखी के पैर छुये और कहा "पहले तुम जैसे गुरु को ना पा पाना मेरा दुर्भाग्य है।"

दूसरे दिन सब भील देवी की मूर्ति के सामने इकट्ठे हुए। शिखिमुखी ने पहले जो बाण बेधा, वह देवी की मूर्ति के सामने रखी थालियों से थोड़ी दूर जा गिरा। रवि ने जो बाण छोड़ा, उसने बिना थालियों को हिलाये, उसमें रखे कुंकुम और हल्दी को देवी की मूर्ति पर बिखेर

दिया।

भीलों ने हर्षध्वनियाँ कीं। तब सिंहबल ने अलंकृत आसन पर रवि को बिठाया और उसे सरदार घोषित किया। अपनी बेटी से उसकी शादी रचायी। मल्लिका और रवि ने मन ही मन शिखिमुखी को धन्यवाद दिया। वह त्याग ना करता तो उनका विवाह होना असंभव था।

शिखिमुखी हार गया, किन्तु उसके बल-पराक्रम पर सिंहबल बहुत ही मुग्ध हुआ, बहुत ही प्रभावित हुआ। जब पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि वह चामुंडी का बेटा है तो उसके आश्चर्य का अंत ना रहा।

उसने चामुंडी को बुलवाया और उससे कहा "तुमने प्रतिज्ञा की थी। बड़ी-बड़ी बातें की थीं, लेकिन क्या हुआ ? अपने बेटे को सरदार नहीं बना सकी। अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहीं कर पायी।" उसके सुर में व्यंग्य था।

तब चामुंडी ने कहा "मेरी प्रतिज्ञा। वह तो पूर्ण हुई सिंहबल। एक समय था, जब कि तुम नररूप राक्षस थे। किन्तु आज तुम अंधे हो। यह देख भी नहीं सकते कि तुम्हारी आँखों के सामने क्या हो रहा है।"

यह उत्तर सुनकर निस्तेज सिंहबल सोच में पड़ गया। मल्लिका ने पूरी बात अपने पिता को सुनायी। सब कुछ जानने के बाद सिंहबल ने आश्चर्य से कहा "बड़ी ही अजीब बात है। यह तो हुई एक बहादूर की हार।"

एक महीने के अंदर ही शिखिमुखी और रवि की बल-परीक्षा हुई। दोनों का आमना-सामना हुआ। भीलों की परिपाटी के अनुसार जो सरदार बनता है, उसे उस प्रतिद्वंद्वी का सामना करना होगा और उसे पुनः हराना होगा, जिसने स्पर्धा में भाग लिया था, उसे अपने बल को प्रमाणित करना होगा। शिखिमुखी ने बड़ी आसानी से रवि को हरा दिया।

तब रवि ने शिखिमुखी को भीलों के सरदार का दायित्व सौंपा। सिंहबल ने शिखिमुखी को आलिंगन में लेते हुए कहा "तुम्हारा त्याग अपूर्व है। तुम छोटे हो, पर सिर झुकाकर तुम्हें प्रणाम करता हूँ।"

उस दृश्य को देखकर शिखिमुखी की माँ चामुंडी गर्व से फूल उठी।

गोविंद की पढ़ाई

रतनपूर नामक गॉव में गोविंद नाम का एक छोटा किसान था । वह हर रोज़ शाम को गॉव के बीच चबूतरे पर बैठा करता और वहाँ इक्ठे लोगों की गपशप सुना करता था । कभी-कभी बीच में दख़ल देकर बातें करने की कोशिश करता तो बाक़ी लोग उसकी हॅसी उड़ाते थे ।

जब कभी भी ऐसा होता तो गोविंद का चेहरा फीका पड़ जाता और वहाँ से उठकर चला जाता ता । पर, दूसरे दिन चबूतरे पर जाता अवश्य था । एक दिन जब वह वहाँ बैठा हुआ था, तब परमेश नामक एक व्यक्ति वहाँ आया । तब वहाँ जमे लोगों में से एक ने उससे पूछा "अपनी आँखें दिखाने शहर जानेवाले थे, नहीं गये ?" परमेश ने तुरंत अपनी ऐनक जेब से बाहर निकाली और कहा "हो आया । देखो, डाक्टर की दी हुई यह ऐनक । डाक्टर बहुत ही समर्थ है । इस ऐनक को ड़ालने के बाद अच्छी तरह पढ़ पाता हूँ । पहले तो मैं मोटे-मोटे अक्षर भी पढ़ नहीं पाता था ।"

एक ने कहा "अच्छी ऐनक हो तो कुछ भी पढ़ा जा सकता है ।" दूसरे ने कहा "मुझे भी आँखों के उस डाक्टर के पास जाना पड़ेगा, क्योंकि मुझसे कुछ भी पढ़ा नहीं जाता ।"

उनकी बातचीत सुनकर गोविंद को अचरज भी हुआ और आनंद भी । दूसरे ही दिन वह शहर गया और उस डाक्टर के बारे में पूछने लगा जिसने परमेश को ऐनक दी थी । उसने एक आदमी से पूछा "हमारे गॉव के प्रमुख सूरदास के दूसरे बेटे परमेश को ऐनक देनेवाले उस डाक्टर का पता बता सकते हैं?" बहुत लोगों से उसने यही सवाल किया । बहुत से लोगों ने बताया कि हमें नहीं मालूम । आख़िर एक आदमी ने सवाल

पूछनेवाले गोविंद को नख से शिख तक देखा और कहा "यहाँ के लोगों को बिल्कुल मालूम नहीं है कि तुम किस गाँव के हो, और यह परमेश कौन है। इसलिए वे सारी बातें भूल जाओ, किसी के पास दुहराना मत। इस गली में सुँदर नामक मशहूर नेत्र-वैद्य है। चुपचाप उसके पास चले जाना। तुम्हारा भाग्य अच्छा रहा तो वे तुम्हारी भी चिकित्सा करेंगे। जन्म से अंधे आदमी को भी वे रोशनी देने की शक्ति रखते हैं।"

गोविंद, सुँदर का घर ढूँढ़ता हुआ गया। उसने वैद्य को अपना गाँव और नाम बताया और कहा "महाशय, क्या आप ही ने हमारे गाँव के परमेश को ऐनक दी थी? वे अब सब पढ़ पाते हैं?"

नेत्र-वैद्य ने थोड़ी देर सोचने के बाद कहा "मैं तो जानता नहीं, वह किस गाँव का है, पर परमेश नामक एक व्यक्ति को मैंने ही ऐनक दी थी।" उसके जवाब पर गोविंद बहुत ही खुश होता हुआ बोला "भाग्य हो तो ऐसा हो। मुझे भी परमेश को दी हुई ऐनक दीजिये।"

नेत्र-वैद्य ने गोविंद को कुर्सी में बिठाया और उस छोटे-छोटे अक्षरोंवालों से लेकर बड़े-बड़े अक्षरोंवालों तक का एक तख्ता दिखाया और पूछा "बताओ, क्या-क्या पढ़ सकते हो?"

गोविंद ने उन अक्षरों को देखते हुए बताया कि मैं कुछ भी पढ़ नहीं सकता। तब उस वैद्य ने तरह-तरह की ऐनकें उसकी आँखों पर लगायीं, लेकिन गोविंद बताता ही रहा कि मैं कुछ भी पढ़ नहीं पाता।

उसके उत्तर से नाराज़ वैद्य ने कहा "मेरी समझ में नहीं आता कि आख़िर तुम्हारी आँखों का दोष क्या है?"

गोविंद ने कहा "हमारे गाँव का परमेश तो सबसे कह रहा था कि आपकी दी हुई ऐनक लगाकर वह सब कुछ पढ़ पाता है। मैं तो बिल्कुल अनपढ़ हूँ, लेकिन सब किताबों को पढ़ने की बड़ी इच्छा है। सोचा कि परमेश को दी गयी ऐनक मुझे भी आप देंगे। इसीलिए आपके पास आया हूँ।" यह सुनकर वैद्य का सिर चक्कर खा गया।

२

(ट्रोय के पतन के बाद रूपधर अपने घर की ओर निकला। किन्तु वह, उसके अनुयायी और नौकाएँ तूफ़ान में फंस गये। बहुत दिनों तक वे दिशाहीन जाते रहे। आख़िर वे एक द्वीप पर पहुँचे। उस द्वीप के निवासियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए रूपधर निकला। अपने बारह अनुयायियों के साथ वह एक गुफ़ा में फंस गया। वह गुफ़ा फाललोचन जाति के राक्षस की थी।) बाद

उस राक्षस की पुकार सुनकर ग्रीकों के दिल थम-से गये। रूपधर ने साहसपूर्वक उस राक्षस से कहा "अजी, हम ट्रोय से घर लौटते हुए ग्रीक सैनिक हैं। दैववश समुद्र में भारी आँधी आयी और हमारी नौकाएँ दिशाहीन जाने लगीं। हम यहाँ पहुँच गये। हमारा प्रभु राराजा जगत में सुप्रसिद्ध है। उन्होंने कितने ही देशों पर विजय पायी है। ट्रोय को उन्होंने तहस-नहस कर दिया। हम आपके अतिथि हैं। अतिथि भगवान के समान होते हैं। इसलिए हमारे योग्य हमारा आदर कीजिये। भगवान से हमारी प्रार्थना है कि वे आपको हर आपदा से बचाते रहें।"

इन बातों को सुनकर राक्षस विकट अट्टहास करता हुआ बोला "अरे मूर्ख, हम देवताओं की कोई परवाह नहीं करते। हम फाललोचनों के सामने, देवताओं की कोई गिनती ही नहीं होती। वे हमारे लिए शून्य हैं। तुम्हें मालूम हो जाना चाहिये कि हमारी शक्ति के सामने वे नहीं के बारबर हैं। यह बताओ कि तुम्हारी

गया। यह भयानक दृश्य देखकर रूपधर और उसके साथी भय से काँप उठे। फाललोचन ने अपना भोजन समाप्त करने के बाद चार-पाँच घंड़ों में रखे कच्चे दूध को पी लिया। फिर अपनी भेड़ों के बीच निश्चिंत सो गया।

रूपधर ने तलवार निकाली। उसने उस राक्षस की छाती को खूब ढूँढ़ा और पता लगाया कि कलेजा कहाँ है ? एक ही वार में उसे ख़तम करना चाहा। पर, इतने में उसे एक बात याद आयी। राक्षस ने गुफ़ा के द्वार को बहुत ही बड़े पथ्थर से ढ़क दिया था। उस पथ्थर को हटाना उसे और उसके साथियों से संभव नहीं है। अगर इसी क्षण वह राक्षस को मार दे तो उसे और उसके साथियों को इसी गुफ़ा में भूख से तड़प-तड़पकर मरना होगा। वह मौत बड़ी ही दर्दनाक होगी। उनकी रक्षा करनेवाला कोई नहीं होगा। इसलिए अच्छी तरह सोच-विचारने के बाद रूपधर ने तलवार म्यान में रख दी और यथास्थान पर लेट गया। उस रात को वह सोया ही नहीं।

सुबह हुई। राक्षस नींद से जागा। बकरियों का दूध दुहा और बच्चों को छोड़ दिया। फिर उसने दो ग्रीक सैनिकों को मारकर कल की ही तरह खा लिया। भेड़ों को हाँकता हुआ बाहर निकल गया। जाते हुए उसने पथ्थर से गुफ़ा को ढ़क दिया, जिससे ग्रीक सैनिक बाहर ना आ सकें।

उस राक्षस के चले जाने के बाद रूपधर पैर

नाव कहाँ है ? पास ही है या दूर। बाक़ी कहानी छोड़ो और पहले मेरे सवाल का जवाब दो।''

रूपधर की समझ में आ गया कि राक्षस ने ऐसा सवाल क्यों किया ? उसने बड़ी चालाकी से जवाब देते हुए कहा ''हमारी कोई नाव हो, तब ना, बता पाएँगे कि नाव कहाँ है। वह आपके तटवर्ती पहाड से टकराकर चूर-चूर हो गयी। मुझे और इन अनुचरों को छोड़कर सबको वरुणदेव ने अपनी लपेट में ले लिया।''

राक्षस ने कोई और सवाल नहीं किया। उसने हाथ फैलाया और अपनी हथेली में दो ग्रीक सैनिकों को ले लिया। उन्हें ज़मीन पर पटक दिया और मार ड़ाला। उन्हें आग में सुलगाया और उनकी हड्डियाँ भी बिना छोड़े खा

जले बिल्ली की तरह इधर-उधर टहलने लगा। अपने साथियों को मारकर खा लिया उस राक्षस ने। अब वह सोचने लगा कि कैसे इसका बदला लिया जाए? कैसे इस गुफ़ा से बचकर निकलें। उसमें, बचकर जाने से भी ज्यादा प्रतीकार की ज्वाला भड़क रही थी। अपनी इष्टदेवी बुद्धिमती की प्रार्थना करने लगा।

आख़िर, उसे एक उपाय सूझा।

उस गुफ़ा में रहनेवाला राक्षस अपने साथ एक लकड़ी ले आया था। उसे गुफ़ा में ही छोड़ गया। वह लकड़ी अब भी कच्ची ही थी। वह लगभग पाल के स्तंभ जितनी मोटी थी। उतनी ही लंबी भी। रूपधर ने लकड़ी कटवायी। उसके सिरे को खूब छीला। उसे आग में जलाया और सख्त बनाया। गुफ़ा में गोबर का जो ढ़ेर था, उसमें छिपाया। रूपधर ने सोच रखा था कि जब राक्षस रात को सोयेगा तब इस पैनी लकड़ी को उसकी आँख में चुभो दूँगा और उसे अंधा बना दूँगा। इसके लिए दूसरे साथियों की भी ज़रूरत पड़ेगी। इसलिए इस काम के लिए उसने चार साथियों को चुन लिया।

शाम होते ही अपनी बकरियों के साथ राक्षस गुफ़ा में आया। दूध दुहने के बाद उसने गुफ़ा का दरवाज़ा बंद कर दिया। फिर दो और ग्रीकों को पकड़कर खा गया।

इतने में रूपधर ने अपने पास रखे पेय को लकड़ी के बरतन में भर दिया। उसे लेकर राक्षस के पास गया और उससे यों कहा "फाललोचन,

यह ले। इस पेय का स्वाद चखो। तुम्हें नरमांस की रुचि मालूम है, पर इस पेय की रुचि से अपरिचित हो। इस दिव्य पेय को तुम्हारे लिए ही ले आया हूँ। तुम तो बहुत बुरे हो। हम पर तुम्हें रत्ती भर भी दया नहीं। ऐसा कड़ुवा बरताव करोगे तो तुम्हें देखने कौन आयेगा?"

राक्षस ने रूपधर के दिये हुए लकड़ी के बरतन को अपने हाथ में ले लिया और उस पेय को धड़ाधड़ पीते जाने लगा। वह उसे बहुत ही रुचिकर लगा।

"यह पेय और हो तो ड़ालो। अपना नाम भी बताओ। हमारी परिपाटी के अनुसार तुम्हारा आतिथ्य भी करूँगा। ऐसे तो, हम भी यहाँ अंगूर का रस पीते हैं, पर वह इतना

स्वादिष्ट नहीं होता। इस पेय का मज़ा ही कुछ और है। अच्छा यह बताओ, तुम्हारा नाम क्या है ?'' राक्षस ने कहा।

उसने कहा ''मेरा नाम खाली आदमी है। याद रखना, अपने वचन के अनुसार तुम्हें मेरा अतिथि-सत्कार करना होगा।'' कहकर उसने तीन बार पेय को बरतन में उँडेला और राक्षस पीता रहा।

राक्षस नशे में कहता रहा ''अरे ऐ खाली आदमी, जब तक बाक़ी ख़तम नहीं होंगे, तब तक तुम्हें छूऊँगा तक नहीं। यही हमारा अतिथि-सत्कार है।'' यह कहता हुआ वह अचेत गिर गया। नशा पूरी तरह चढ़ा हुआ था। गोबर के ढ़ेर से रूपधर ने तुरंत लकड़ी निकाली और उसके सिरे को आग में जलाया। अपने साथियों को प्रोत्साहन दिया, जिससे उनमें धैर्य आये। थोड़ी ही देर में लकड़ी का सिरा खूब जला। रूपधर के साथी भी अब तैयार हो गये। उनकी सहायता से रूपधर उस लकड़ी को राक्षस के पास ले गया और अंगारे की तरह जलते हुए उस लकड़ी के सिरे को उसकी आँख में ज़ोर से घुसेड़ दिया। राक्षस की चिल्लाहट से, दर्द-भरी कराह से गुफ़ा प्रतिध्वनित हो उठी। वह उठा और आँख में घुसी लकड़ी ज़बरदस्ती खींच दी और फेंक दी। फिर अन्य फाललोचनों की सहायता के लिए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। पास ही गुफ़ाओं में रहनेवाले फाललोचन उसकी चिल्लाहट सुनकर दौड़े-दौड़े आये। गुफ़ा के बाहर ही खड़े होकर वे चिल्लाने लगे ''क्या हुआ? क्यों इस तरह चिल्ला-चिल्लाकर हमारी रात की नींद ख़राब कर रहे हो ? क्या कोई तुम्हारी बकरियाँ चुराके ले गया ? क्या कोई आदमी तुम्हें अपने बल से या उपाय से मार रहा है ?''

''हाँ, हाँ, मुझे खाली आदमी मार रहा है।'' राक्षस ने चिल्ला-चिल्लाकर कहा।

''खाली आदमी मार रहा है, कैसी अजीब बातें कर रहे हो ? बेवकूफ़ी की बाते छोड़ो और चुपचाप सो जाओ। तबीयत ठीक ना हो तो सुबह तक ठीक हो जायेगी।'' कहकर फाललोचन वहाँ से चले गये।

गुफ़ा के अंदर जो राक्षस था, देख नहीं पाता था, इसलिए टटोलते हुए वह गुफ़ा के द्वार पर गया। वहाँ से पथ्थर को हटाया और द्वार पर आसन लगाकर बैठ गया, जिससे कोई बाहर ना जा सके।

ग्रीक़ अगर बाहर जाने का प्रयत्न करें तो उन्हें पकड़ लेने की उसकी योजना थी।

किन्तु रूपधर भी कोई साधारण आदमी नहीं था। अक़्ल का वह बड़ा तेज़ था। इस गुफ़ा से बाहर जाने के लिए और अपने अनुचरों को साथ ले जाने के लिए उसने अनेकों उपाय सोच रखे। उन सब उपायों में से एक उपाय उसे बहुत ही बेहतर लगा।

उस राक्षस की भेड़ें काफ़ी बलिष्ठ और बड़ी थीं। उनके शरीर भर में घना ऊन था। रूपधर ने तीन-तीन भेड़ों को एक साथ बाँधा और उनकी पेट के नीचे एक-एक साथी को बाँध दिया। इस प्रकार अपने साथियों के लिए आवश्यक प्रबंध किया। वह अब अकेला बच गया। गुफ़ा के अंदर जो बड़ी भेड़ थी, उसे अपने लिए प्रत्येक रूप से चुना। थोड़ी देर में सुबह हुई। भेड़ें और बकरियाँ चरने निकलीं। गुफ़ा के द्वार पर दर्द से कराहता हुआ राक्षस बाहर जाते हुए भेड़ों और बकरियों के पीठों पर प्रेम से हाथ फेरने लगा।

उस मूर्ख को मालूम नहीं हो पाया कि उसके शत्रु उनके नीचे छिपे हुए हैं। जब सब साथी बाहर चले गये, तब रूपधर प्रत्येक रूप से अपने लिए चुनी हुई भेड़ का ऊन पकड़कर नीचे लटकता रहा। यों वह भी बाहर आ

में जान आयी। उन्हें बचने की थोड़ी भी आशा नहीं थी, इसलिए वे रूपधर की प्रशंसा करने लगे।

रूपधर तथा अन्य योद्धाओं की प्रतीक्षा में नौका में बैठे बाक़ी सैनिक घबरा रहे थे। उनके लौटने में देरी हो गयी थी, इसलिए उन्हें शंका हो रही थी कि कहीं हमारे लोग किसी आफ़त में फँस तो नहीं गये। रूपधर ने पहुँचने के बाद उन्हें सारा किस्सा सुनाया। मृत अपने साथियों की याद करके वे विलाप करने लगे। रूपधर ने उन्हें सांत्वना दी, ढ़ाढ़स बंधाया और कहा "यह शोक का समय नही है। हमारे पास समय नहीं है। जो भेड़ें और बकरियाँ मिलती हैं, उन्हें पकड़कर लाना और नाव पर चढ़ाना। हम तुरंत यहाँ से निकलकर जाएँगे।" रूपधर के अनुचर नौका को तट की ओर खींच ले आये। भेडों और बकरियों को नाव में चढ़ाया।

फिर नौका तट को छोड़कर थोड़ी दूर गयी। तब रूपधर ने गुफ़ा की तरफ़ मुड़कर ज़ोर से चिल्लाया "अरे ओ पापी, क्या तुमने समझ रखा था कि मैं और मेरे अनुचर तुम्हारे अधीन हो जाएँगे? तुमने हमें भी खा जाने की सोची थी क्या? अतिथियों को खा जाने के जुर्म में तुम्हें अच्छा दंड मिला। कम से कम अब अपने को सुधारो।"

राक्षस को यह चिल्लाहट सुनायी पड़ी। वह आग बबूला हो गया। उसमें-रोष भर आया। उसने एक बड़ी चट्टान उठायी और

गया। द्वार पर बैठे राक्षस ने उस भेड़ की पीठ थपथपायी और उससे कहा "हर रोज़ सबसे पहले निकलती थी, आज क्यों पीछे रह गयी? सुस्त कहीं के। दुष्ट खाली आदमी ने तुम्हारे यजमान को खूब पेय पिलाया और उसे अंधा बना दिया। क्या इसपर तुम्हें क्या शोक हो रहा है? मैं उसे सबक़ सिखाऊँगा। तुम बेफ़िक्र होकर जाओ।"

बाहर आने के बाद रूपधर ने भेड़ के ऊन को छोड़ दिया और जमीन पर खड़ा हो गया। इसके बाद बंधे हुए एक-एक साथी की रस्सियाँ खोल दीं। इसके बाद, रूपधर की अक़्लमंदी से छूटे सब ग्रीक विलंब किये बिना समुद्र के तट पर पहुँच गये। अब उनकी जान

उस दिशा में फेंकी, जिस दिशा से रूपधर की आवाज़ आयी थी। यह चट्टान रूपधर की नौका से थोड़ी दूर ही जा गिरी। जहाँ वह गिरी, वहाँ एक बहुत बड़ी लहर उभर आयी। इससे रूपधर की नौका फिर से समुद्र के तट की ओर आने लगी। क्योंकि नाव पर उनका काबू ना रहा।

रूपधर ने घबराकर नौका को फिर से समुद्र की ओर बढ़ाया और अपने अनुचरों को आँख मारकर इशारा किया। इस बार जब नौका दुगुनी दूर गयी, तब रूपधर ने राक्षस को और उकसाने का प्रयास किया। उसके अनुचर उससे गिड़गिड़ा रहे थे कि चुप रहो। पर, उनकी बातों की लापरवाही करते हुए बड़े ही उत्साह से वह यों चिल्लाने लगा "अरे अधम राक्षस, अगर कोई पूछे कि तुम्हें किसने अंधा बना दिया तो बताना कि रूपधर ने किया है। उनसे यह भी बताना कि रूपधर कोई और नहीं, ट्रोय का विजेता है। उनसे कहना कि वह इथाका देश का नागरिक है।"

इस बार राक्षस ने एक और बड़ी चट्टान फेंकी। उसने इस बार अपना पूरा बल लगाया। वह रूपधर की नौका के पास आ गिरी। किन्तु इस बार उस चट्टान के गिरने से जो लहर उठी, उससे रूपधर की नौका को फ़ायदा ही हुआ। वह समुद्र के अंदर नाव को ढ़केलती रही। तट से उन्हें और दूर ले गयी। शीघ्र ही रूपधर और उसके अनुचर शेष नौकाओं के पास पहुँच गये। उन नौकाओं में बैठे ग्रीक अपने साथियों की प्रतीक्षा में बड़े ही बेचैन थे। उन्हें अब बहुत आनंद हुआ। पर, राक्षस के हाथों मरे साथियों के लिए उन्हें भी बहुत रंज हुआ।

फिर रूपधर की लायी भेड़ों व बकरियों को मारकर सबने समान रूप से बाँटकर खाया। बड़े ही उत्साह से उन सबने शराब पी और दिन गुज़ारा। रात को तट पर आकर रेत में मस्त सो गये। दूसरे दिन सबेरे ही रूपधर ने आज्ञा दी कि लंगर उठा दिया जाए और यात्रा शुरू हो जाए। नौकाएँ समुद्र में तेज़ी से जाने लगीं।

(सशेष)

'चन्दामामा' की ख़बरें

जंतुओं की क़ाबिलियत

अमेरीका के ओरिगान क्रेटर नेशनल पार्क में जून २९ को, फ्रांक मिल्लर नामक एक युवक अपनी प्रेयसी के साथ टहल रहा था। उनके साथ 'बेर' नामक पाँच साल का एक कुत्ता भी था। उस युवती ने यह सोचकर उस कुत्ते को छोड़ दिया कि वह भी घूम-फिरकर आये। बरफ़ से घिरे एक तालाब के किनारे

वह दौड़ने लगा। उसके पैर फिसल गये और वह चालीस फुट की गहराई में जा गिरा। बहुत दूर तक जब वह दिखायी नहीं पड़ा तो मिल्लर ने खेल की सामग्री भी उसी तालाब में फेंक दी। इस सामग्री से 'बेर' ज़्यादातर खेला करता था। मिल्लर और उसकी प्रेयसी कुत्ते के ग़ायब हो जाने से बहुत ही दुखी हुए। किन्तु एक सप्ताह के बाद वह कुत्ता पड़ोस के गाँव में सुरक्षित दिखायी पड़ा। कहते हैं कि गहराई से बाहर आने और रास्ता ढूंढने में वह क़रीबन २९ कि.मी. चलता रहा। पार्क के अधिकारी ने इस घटना का ज़िक्र करते हुए कहा ''जंतुओं का सामर्थ्य अपूर्व होता है। ऐसा कोई काम नहीं, जो ये नहीं कर सकते।''

आघात

केरल के आलप्पी के नज़दीक का मांधार ग्रामवासी है सुनील। उसे बिल्लियों को पालने का बड़ा शौक है। उसके पास सात बिल्लियाँ थीं। उनमें से अम्मणी नामक बिल्ली को, गाँव के सब लोग जानते हैं। वह बड़े ही अनुशासन के साथ रहा करती थी। वह बिस्कुट और कच्चे मिर्च खाया करती थी। सामने मछलियाँ भी रखी जाएँ तो वह छूती तक नहीं थी। गाँव के लोग उस बिल्ली के बारे में अजीब कहानियाँ सुनाया करते हैं। उसके बारे में हाल ही में स्थानीय अख़बार में फ़ोटो सहित ख़बर छपी। इसके दूसरे ही दिन वह मर गयी। दो दिनों के बाद सुनील का पिता मर गया। बाकी छे बिल्लियाँ एक के बाद एक, एक-दो हफ़्तों में मर गयीं। सुनील से यह आघात सहा नहीं जा सका। उसने कहा कि भविष्य में बिल्लियों को पालूंगा ही नहीं।

कृत्रिम कलेजा

टोक्यो विश्वविद्यालय के चिकित्सा-विभाग ने हाल ही में संसार का एक नया रिकार्ड स्थापित किया। यहाँ के चिकित्सा-प्रवीणों ने पाँच साल की एक बकरी में कृत्रिम कलेजे का प्रबंध किया। चार सौ दिनों के बाद भी वह बिल्कुल ही स्वस्थ थी। इसके पहले भी १९९२ में अमेरीका के एक विश्वविद्यालय में इस दिशा में प्रयोग हुए। तब कृत्रिम कलेजा जिस जंतु में रखा गया, वह केवल ८८ घंटों तक ही जीवित रह पाया।

वचन-भंग

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। यथावत् श्मशान की ओर मौन धारण किये अग्रसर होने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "मेरा संदेह है कि किसी ने तुमसे दया की भीख माँगी है और तुम्हारे हृदय को द्रवित कर दिया। तुम्हें अपनी करुण गाथा सुनाकर मोम बना दिया। तुम पिघल गये और उनकी सहायता करने पर तुल गये हो। इसी कारण इतनी तीव्र कठिनाइयों का सामना कर रहे हो। नाना प्रकार की यातनाएँ सह रहे हो। अगर ऐसा नहीं होता तो राजा होकर तुम्हें यह सब कुछ क्यों करना पड़ता? आधी रात को इस भयंकर श्मशान में घूमने की ज़रूरत तुम्हें क्यों पड़ती? तुम्हें तो ज्ञात ही होगा कि मनुष्यों में अधिक संख्यक निरे स्वार्थी होते हैं। अपना काम समाप्त होने के बाद अपने वादे भूल जाते हैं। वे तो ऐसा व्यवहार करते हैं, मानों

बैताल कथा

उन्होने कोई वचन ही नहीं दिया हो। इंद्रपुरी की महारानी इंदुमती इसका ज्वलंत उदाहरण है। उसकी कहानी सुनते जाओ और अपनी थकावट भी दूर करते जाओ।''बेताल फिर इंदुमती की कहानी यों सुनाने लगा।

इंदुमती, इंद्रपुरी के राजा जयकेतन की पटरानी थी। उनका विवाह बारह साल पहले हुआ, पर अब तक उनकी कोई संतान नहीं हुई। संतान-प्राप्ति के लिए इंदुमती ने कई पूजाएँ कीं। कह सकते हैं कि कोई ऐसी पूजा नहीं, जिसे उसने ना की हो।

सब पुण्यक्षेत्रों में गयी। हर शनिवार को वह उपवास रखती और संध्या समय नगर के सरहदों के पर्वत पर स्थित कार्तिकेय के मंदिर में अवश्य जाती थी। संतान के लिए वह वहाँ पूजा करती थी। पूजा के बाद मंदिर के पिछवाड़े के बरगद के पेड़ के तले साँप की जो बांबी थी, उसकी भी भक्तिपूर्वक पूजा करती थी।

एक शनिवार को मंदिर में उसने पूजाएँ कीं। फिर उसने पुजारी से कहा ''लोगों का विश्वास है कि श्रद्धापूर्वक पूजाएँ करने पर भगवान प्रसन्न होते हैं और संतान का वर देते हैं। मैंने तीन सौ शनिवार पूजाएँ कीं। कभी भी कोई विघ्न आने नहीं दिया। किन्तु भगवान मुझपर प्रसन्न नहीं हुए। मैं माँ नहीं बन सकी।'' उसने बड़ी दीनता-भरे स्वर में अपना दुखड़ा सुनाया।

पुजारी ने उसे सांत्वना देते हुए उत्तर में कहा ''महारानी, निराश मत होइये। वह समय अवश्य आयेगा, जब कि आपके मन की इच्छा अवश्य पूर्ण होगी। वह दिन अवश्य आयेगा, जब कि भगवान की कृपा-दृष्टि आप पर पड़ेगी। धीरज रखिये।''

इंदुमती ने भगवान कार्तिकेय की मूर्ति को प्रणाम किया और मंदिर के पिछवाडे में गयी। वहाँ के बरगद के पेड़ के तले साँप की जो बाँबी थी, उसमें दूध ड़ाला। कुंकुम और हल्दी से बाँबी को पोता और तीन बार उसके चारों ओर घूमी। जब वह लौटने लगी तब एक आवाज़ सुनायी पड़ी ''इंदुमती, इधर आ।'' इस आवाज़ को सुनकर वह चौक पड़ी। उसने घूमकर देखा तो देखा कि बरगद के पेड़ से थोड़ी दूरी पर जो चट्टान थी, उसपर एक बैरागी बैठा

हुआ था। बालों की जटाएँ लटक रही थीं और फटे-पुराने कपड़े पहने हुए था।

एक अनजाने व्यक्ति का, उसका नाम लेकर पुकारना इंदुमती को अच्छा नहीं लगा। जब वह उस बैरागी पर नाराज़ होने लगी तो वह ठठाकर हँसता हुआ बोला "क्रोधित मत होना इंदुमती। मैं जानता हूँ कि तुम संतान-प्राप्ति के लिए तड़प रही हो। तुम्हारी इच्छा पूरी करने ही आया हूँ।" बैरागी ने उसके मन की वेदना को जान लिया। इंदुमती को यह जानने में देर नहीं लगी कि यह बैरागी अवश्य ही कोई असाधारण व्यक्ति होगा। इसलिए वह उसके पास गयी और उसके पैरों को छूती हुई बोली "मुनिवर, मैं जान गयी कि आप सामान्य मनुष्य नहीं हैं। मुझपर कृपा कीजिये।"

बैरागी ने बगल में ही रखी हुई थैली दिखाते हुए कहा "इसमें केले हैं। केवल एक केला लेना और खाना। तुम्हारी इच्छा पूरी होगी।"

इंदुमती ने बड़ी ही आतुरता से थैली में हाथ रखा। थैली केलों से भरी थी। किन्तु उनमें से कुछ पतले थे और कुछ पककर बहुत ही नरम थे। उसने मन ही मन सोचा कि स्वस्थ बालक चाहिये। फिर थैली के नीचे से एक मोटा केला निकाला और छिलका हटाया। तब उसे मालूम हुआ कि यह जुड़वाँ केला है।

इंदुमती जब वह केला खाने लगी तब बैरागी ने चुपके से थैली उठायी और पहाड़ से उतरकर चला गया।

इस घटना के तीन महीनों के बाद राजवैद्यों ने इंदुमती की परीक्षा करने के बाद निर्धारित किया कि वह गर्भवती है। राजा और रानी के आनंद की सीमा ना रही।

नौ महीनों के बाद इंदुमती ने जुड़वें बच्चों को जन्म दिया। किन्तु दोनों के शरीर एक दूसरे से जुड़े हुए थे। बिल्कुल उस केले की तरह, जिसे उसने थैली से लेकर खाया था।

"छह महीनों के अंदर शस्त्र-चिकित्सा नहीं की जाए और दोनों को अलग ना किया जाए तो इनके बचने की उम्मीद नहीं" राजवैद्यों ने दस दिनों के बाद अपना विचार व्यक्त किया।

राजा ने कहा "तब तक प्रतीक्षा क्यों करें? शस्त्र-चिकित्सा तुरंत कीजिये।" राजवैद्यों ने

अपनी असमर्थता व्यक्त करते हुए कहा "महाराज, यह शस्त्र-चिकित्सा तो कोई निष्णात तथा अनुभवी ही कर पायेगा। हमारे राज्य में इतने योग्य चिकित्सक कोई हैं नहीं।"

"तो फिर कहाँ हैं? पड़ोस के राज्यों में कोई हों तो उनका स्वागत कीजिये। उनसे कहिये कि मूल्यवान पारितोषिक दिया जायेगा।" इंदुमती ने कहा।

राजवैद्य थोड़ी देर तक सकपकाते रहे और फिर बोले "महारानी, हमारी जानकारी में एक ही व्यक्ति है, जो यह शस्त्र-चिकित्सा करने की योग्यता रखता है। उसका नाम है, अश्विनीदत्त।" अश्विनीदत्त का नाम सुनते ही राजा जयकेतन क्रोधित होकर बोला "हमारे जानी दुश्मन चंद्रगिरि का आस्थान-वैद्य? नहीं, किसी भी हालत में उससे यह चिकित्सा नहीं करवाऊँगा।" राजा के स्वर में दृढ़ता थी।

इंदुमती समझ गयी कि उसका पति इस दिशा में कोई क़दम नहीं उठायेगा, उसकी सहायता नहीं करेगा तो उसने निर्णय कर लिया कि वह स्वयं जाकर अश्विनीदत्त को यहाँ ले आयेगी और उससे शस्त्र-चिकित्सा करायेगी। उसने अपने बच्चों को वैद्यों के संरक्षण में रखा और मायके जाने का बहाना बनाकर अपनी एक दासी के साथ चंद्रगिरि गयी। उसने अपना वेष बदल लिया और दो दिन और दो रातों की यात्रा के बाद वहाँ पहुँच पायी।

चंद्रगिरि में, राजवैद्य के निवास-स्थल का पता उसे आसानी से लग गया। रात हो गयी थी। अश्विनीदत्त ब्रह्मचारी था। वह उस समय

रसोई बना रहा था। दरवाज़े के खटखटाने की आवाज़ सुनकर वह स्वयं दरवाज़ा खोलने आया।

"लंबी यात्रा के बाद, तक़लीफ़ें झेलती हुई आपके पास आयी हूँ। मुझे संतान-भिक्षा देने की शक्ति केवल आप ही में हैं।" कहती हुई इंदुमती ने अपने दोनों हाथ उसके सामने पसारे। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

इंदुमती ने अपने जुड़वें बच्चों की शस्त्र-चिकित्सा के बारे में विवरण दिया। पूरा सुनने के बाद अश्विनीदत्त ने कहा "अपने बच्चों के बारे में चिंतित होने की कोई आवश्यकता नहीं। शस्त्र-चिकित्सा से उनकी जान बच सकती है। पर यह तो बताओ कि तुम्हारा घर यहाँ से कितनी दूर है?" "मैं इंद्रपुरी की रहनेवाली हूँ, मैं इंद्रपुरी की महारानी हूँ।" इंदुमती ने बिना किसी झिझक के कह दिया।

अश्विनीदत्त चौंक पड़ा। उसका मुख कांतिहीन हो गया। उसने कहा "शायद आप नहीं जानतीं कि इस शस्त्र-चिकित्सा के दूसरे ही क्षण, मेरा कटा सिर चंद्रगिरि के किले के मुखद्वार पर लटकाया जायेगा।"

"मैं वचन देती हूँ कि आपकी कोई हानि नहीं होगी। आपके प्राणों पर कोई आँच नहीं आयेगी। मेरी बातों का विश्वास कीजिये। मुझे निराश मत कीजिये।" इंदुमति ने गिड़गिड़ाया।

अश्विनीदत्त थोड़ी देर तक सोचता रहा और फिर साहस बाँधकर कहा "तो चलिये।"

इंद्रपुरी पहुँचने के दूसरे ही दिन उसने शस्त्र-चिकित्सा की और दोनों बच्चों को अलग किया। उसकी शस्त्र-चिकित्सा सफल हुई।
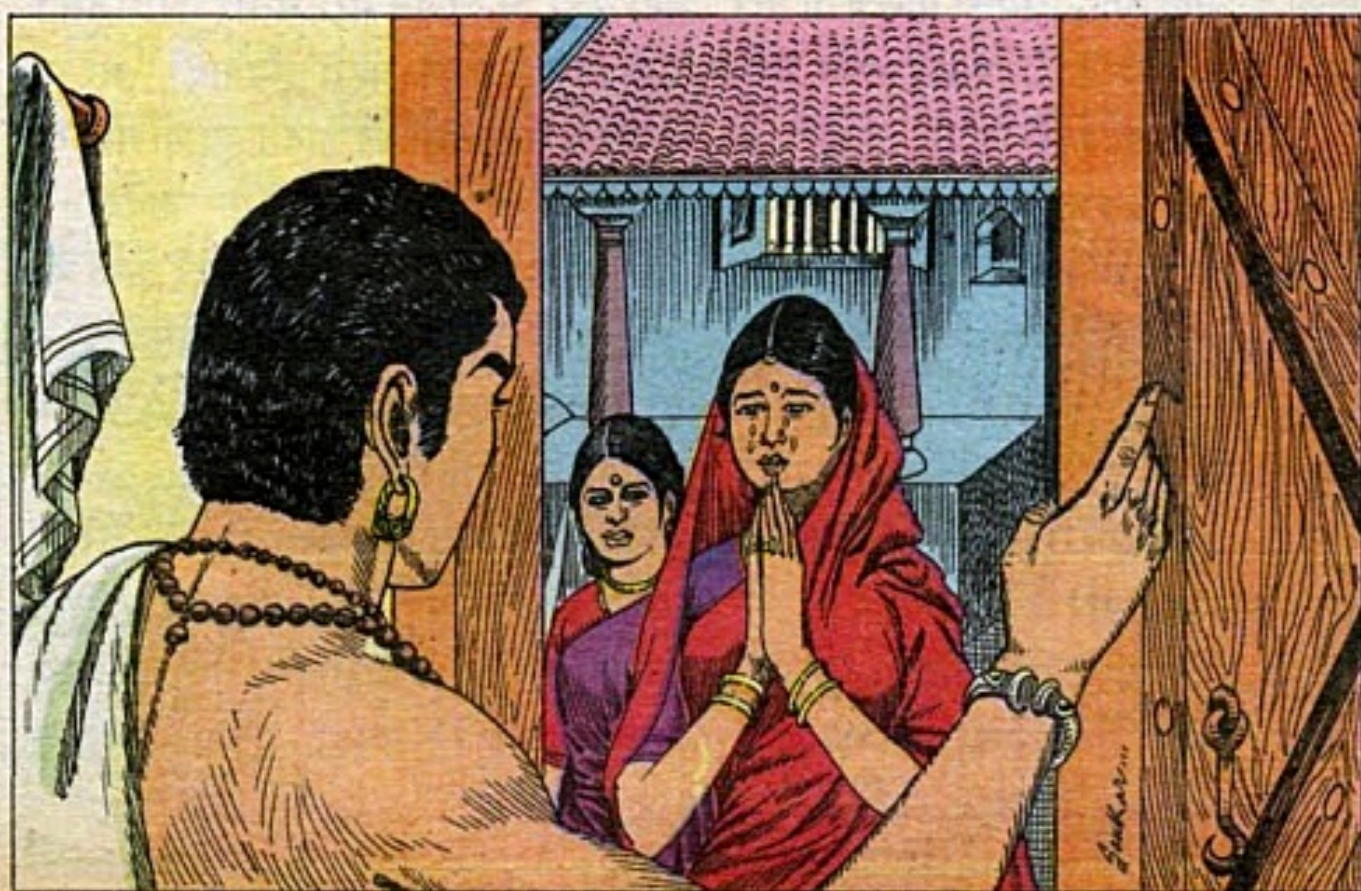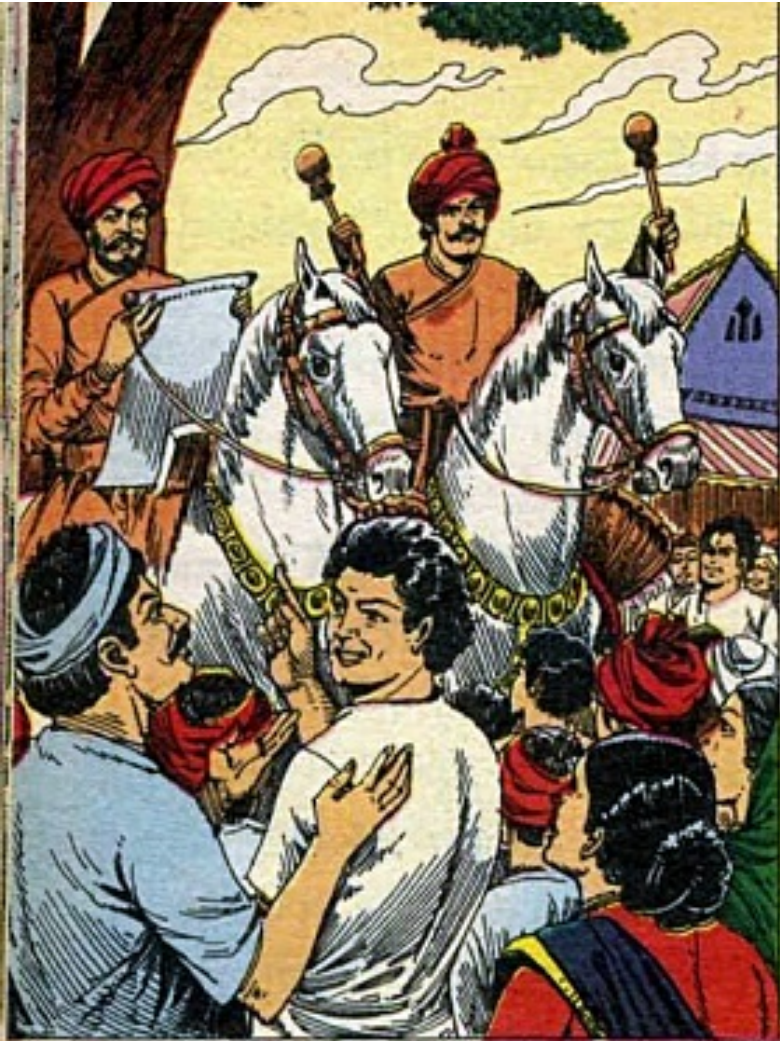
दोनों बच्चे जीवित और स्वस्थ हैं।

राजा की आज्ञा के अनुसार राज्य भर में घोषणा करवायी गयी, जिसका सारांश यों था। शस्त्र-चिकित्सा करके दोनों बच्चे अलग किये गये। यह महान कार्य किया, चंद्रपुरी के आस्थान वैद्य अद्‌भुत शस्त्र-चिकित्सक अश्विनीदत्त ने। इस काम से उन्होंने राजवंश को बचाया। राजदंपति तथा राज्य की जनता उन्हें कृतज्ञता प्रकट करती है।

महारानी, अश्विनीदत्त को मूल्यवान पुरस्कार देने लगी तो उसने लेने से इनकार कर दिया और कहा "महारानी, आप के आदर-सम्मान तथा आपने मेरी जो भलाई की, उसके लिए धन्यवाद।"

बेताल ने विक्रमार्क को यह कहानी सुनायी और कहा "राजा, इंदुमती ने जो किया, क्या वह वचन-भंग नहीं है? उसने वचन दिया था कि किसी भी परिस्थिति में अश्विनीदत्त की प्राण-हानि नहीं होगी। किन्तु शस्त्र-चिकित्सा की सफलता के बाद उसने घोषणा करवायी और अश्वनीदत्त को अपनी कृतज्ञता जतायी। अपने ही राज्य में नहीं, बल्कि सब राज्यों को इस घोषणा के द्वारा उसने बताया कि शस्त्र-चिकित्सक अश्विनीदत्त है। ऐसा करके क्या उसने अश्विनीदत्त की जान के साथ खिलवाड़ नहीं किया? उसे आपत्तियों में नहीं फँसाया? क्या यह कृतघ्नता नहीं कहलायेगी? अश्विनीदत्त को यह मालूम था कि वह जो काम करने जा रहा है, खतरे से खाली नहीं, फिर भी उसने अपनी सम्मति क्यों दी? इंदुमती की दीन प्रार्थना पर वह क्यों पसीज उठा। आखिर उसने क्यों कहा कि आपने मेरी भलाई की, जिसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।" मेरे इन संदेहों के समाधानों को जानते हुए भी मौन रह गये तो तुम्हारा सिर टुकड़ों में फट जायेगा।"

विक्रमार्क ने उसके संदेहों को दूर करते हुए कहा "अश्विनीदत्त उन महान व्यक्तियों में से था, जिसने अपने जीवन को वैद्य-वृत्ति के लिए समर्पित किया था। अपने कार्य में कोई रुकावट ना आये, वह निरांटक चलता रहे, इसी के लिए उसने विवाह भी नहीं किया। ब्रह्मचारी ही बना रहा। सच्चा वैद्य रोग से पीडित, अपने कट्टर शत्रु के भी प्राणों को बचाना अपना परम धर्म

मानता है। इसी कारण, धर्म-बद्ध होकर, अपने प्राणों की भी परवाह किये बिना, इंदुमती के साथ उसके बच्चों की शस्त्र-चिकित्सा करने गया। यह काम तो किसी साधारण वैद्य से नहीं हो सकता। इसके लिए वैद्य-शास्त्र में निष्णात होना आवश्यक है। साथ ही चाहिये अनुभव तथा कौशल। इस प्रकार की योग्यता केवल अश्विनीदत्त में ही थी। अड़ोस-पड़ोस के राज्यों में कोई और दूसरा नहीं था, जो यह काम कर पाये। वैद्य के नाम को गुप्त रखने मात्र से चंद्रगिरि के राजा रुद्रसेन से यह सत्य छिपाया नहीं जा सकता। वह अवश्य ही समझ जायेगा कि चिकित्सा उसी के आस्थान-वैद्य अश्विनीदत्त ने की। शत्रु-वंश को बचाने के अपराध में वह अवश्य ही वैद्य को कठोर दंड देगा। इस विपत्ति को भाँपकर ही इंदुमती ने ऐसी घोषणा करवायी, जिससे सबको उसका नाम मालूम हो जाए। ऐसा करने के कारण अश्विनीदत्त को दंड देने का साहस चंद्रगिरि का राजा रुद्रसेन नहीं कर पायेगा, क्योंकि अश्विनीदत्त ने अपने वृत्ति-धर्म को निभाने के लिए अपने प्राणों को दाँव पर लगा दिया। इतर राज्यों में उसका आदर-सम्मान होगा। अपने राज्य की प्रतिष्ठा में चार-चौद लगाये। ऐसे सच्चे तथा सुशील व्यक्ति को दंड देने पर रुद्रसेन की ही बदनामी होगी। अगर तैश में आकर उसने ऐसा किया भी तो हो सकता है, अन्य राजा उसके इस अमानुष कृत्य पर उसका विरोध करें, उससे शत्रु-भावना बढ़ाएँ। अपने राज्य की जनता भी विद्रोह कर बैठे। इसलिए डर से ही सही, अपने बैर को छिपाकर, अश्विनीदत्त को उसे बधाई देनी होगी। इस पेचेदी तथा बारीक़ समस्या का परिष्कार निकाला, इंदुमती ने बड़ी ही चालाकी से। यही कारण है कि अश्विनीदत्त ने इंदुमती को कृतज्ञता प्रकट की। यह कहना ग़लत है कि ऐसा करके इंदुमती ने अपना वचन तोड़ा अथवा कृतघ्नता का व्यवहार किया।''

यों राजा का मौन-भंग करने में सफल बेताल शव को लेकर भाग गया और पेड़ पर जा बैठा।

आधार - सुचित्रा की रचना

राजनर्तकी

अवंती तथा कुसुमपुर नगर के अच्छे और निकट संबंध थे। अवंती की राजनर्तकी थी कौमुदी। राजा की आज्ञा का पालन करने वह कुसुमपुर गयी और वहाँ के उत्सवों में नृत्य किया। जब वह अवंतीनगर लौट रही थी, तब मार्ग-मध्य के जंगल में लुटेरों ने उसे अपना बंदी बना लिया। कौमुदी के साथ जो सैनिक थे, वे भी लुटेरों के वश हो गये।

लुटेरे, राजनर्तकी को अपने नायक के पास ले गये। अवंती ने उस नायक से कहा ''आपने मुझे क्या समझ रखा है। अवंती की राजनर्तकी हूँ। महाराज को अवश्य ही मालूम हो जायेगा कि आपने मुझे बंदी बनाया है। वे अपनी सेना सहित आयेंगे और आप लोगों का सर्वनाश करेंगे।''

लुटेरों ने उसकी बातों का विश्वास नहीं किया। उन्होंने समझा, झूठ बोल रही है। कोई साधारण नागरिक होगी। उनमें से एक ने कहा ''तुम और राजनर्तकी? अच्छा हुआ, तुमने तो यह नहीं कहा कि मैं ही महारानी हूँ।''

यह सुनकर सब लोग हँस पड़े। लुटेरों के नायक ने उससे कहा ''तुम नाचो और साबित करो कि तुम्हीं राजनर्तकी हो।''

कौमुदी बहुत ही नाराज़ होती हुई बोली ''तुम जैसे जंगली आदमियों के सामने नाचूँ? मैं नाचूँगी तो राज दरबार में ही। मेरी जान भी निकाल लो, पर मैं यहाँ नहीं नाचूँगी।''

उसकी बात सुनकर नायक चौंक उठा और बोला ''हाँ, यह निस्संदेह ही राजनर्तकी है। अपने धंधे का मूल्य व गौरव जाननेवाली कलाकार है। इसे और इसके साथ आये लोगों को सादर जंगल के उस पार पहुँचा दो।'' यों उसने अपने अनुचरों को आज्ञा दी।

-नारायण दास

हमारे देश के क़िले - ७

दक्कन के मज़बूत क़िले

रचना : मीरा उग्रा ◆ चित्र : अरित्रा

देवगिरि क़िला दक्षिण भारत का सिंहद्वार कहा जाता है। दक्कन की पीठभूमि के मध्य, रहस्यमय स्थान पर काले पथ्थरों पर निर्मित यह क़िला बहुत ही दृढ़ है और बहुत ही गंभीर दिखता है। इसीलिए इसका यह नाम पड़ा।

नगर के चारों ओर मज़बूत चहारदीवार होती थी। नगर और पहाड़ पर निर्मित किले के बीच याने पहाड़ के चारों ओर मज़बूत दीवारें थीं और तीन खाइयाँ भी थीं। नीचे की खाई के पानी के स्तर को घटाने और बढ़ाने की भी सुविधा थी। शत्रु जब आक्रमण करते थे, तब पानी का स्तर बढ़ाया जाता था और उस पानी से खाई पर जो पुल था, उसे पानी में डुबो दिया जाता था। किसी हाल में शत्रु अगर पुल लाँघकर अंदर आ भी जाएँ तो उन्हें सुरंग के मार्ग से ही प्रवेश करना पड़ता था।

देवगिरि क़िले का प्राचीन पर्यवेक्षण शिखर

राजप्रासाद पहुँचने के लिए यह सुरंग मार्ग ही एकमात्र मार्ग था। यहाँ एकदम अंधकार होता था और यह मार्ग बड़ा खतरनाक भी था। दीवार के पीछे छिपे सैनिक शत्रुओं को मारते जाते थे। शत्रुओं की संख्या अगर बहुत ज़्यादा रही तो सुरंग को धुएँ से भर देते थे। इससे शत्रु साँस ले नहीं पाते थे और मर जाते थे अथवा मारे जाते थे।

सुरंग का मार्ग बीच में तीन भागों में विभाजित होता था। इनमें से एक ही मार्ग से बाहर आ सकते थे। शेष दोनों मार्गों से जो जाते थे, वे गहराइयों में गिर जाते थे और दर्दनाक मौत के शिकार बन जाते थे।

सुरंग के मार्ग से बचना संभव हो भी पाया तो
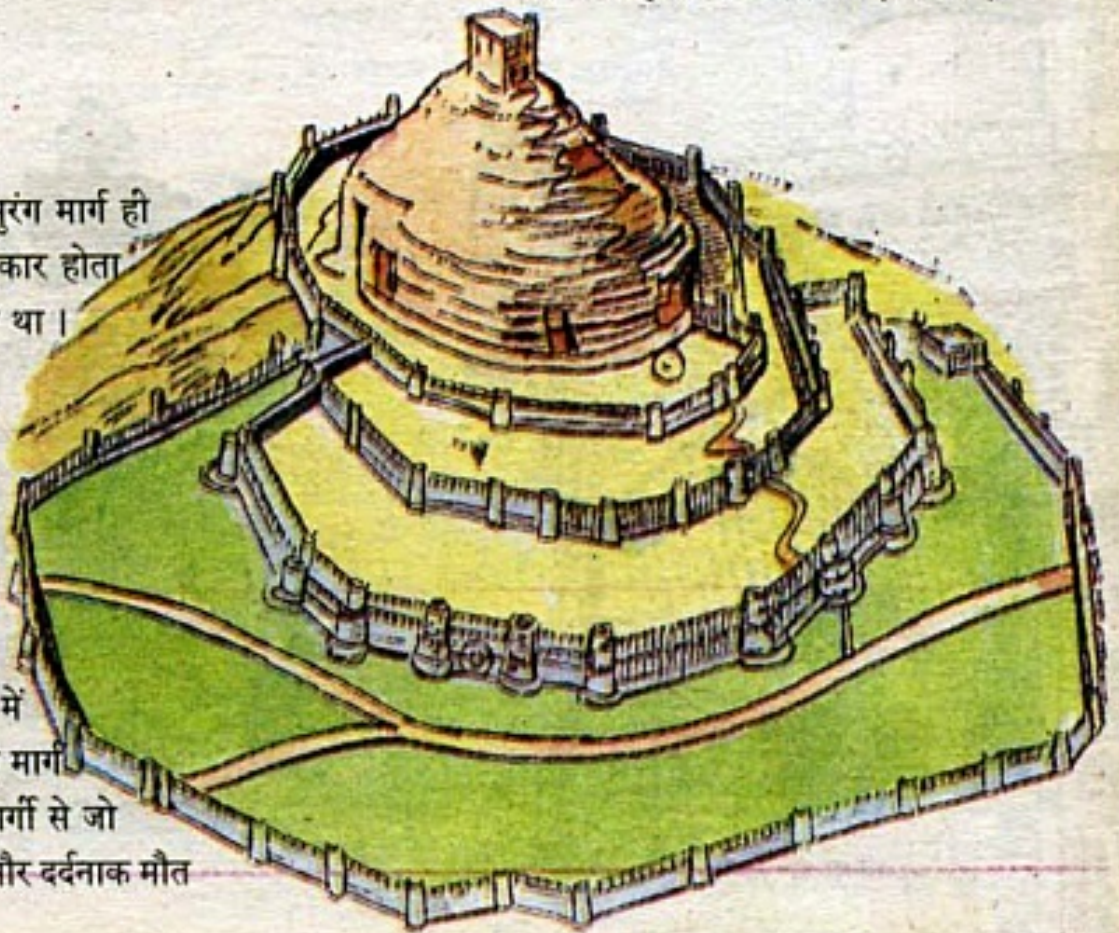
दौलताबाद क़िले का स्वरूप चित्र
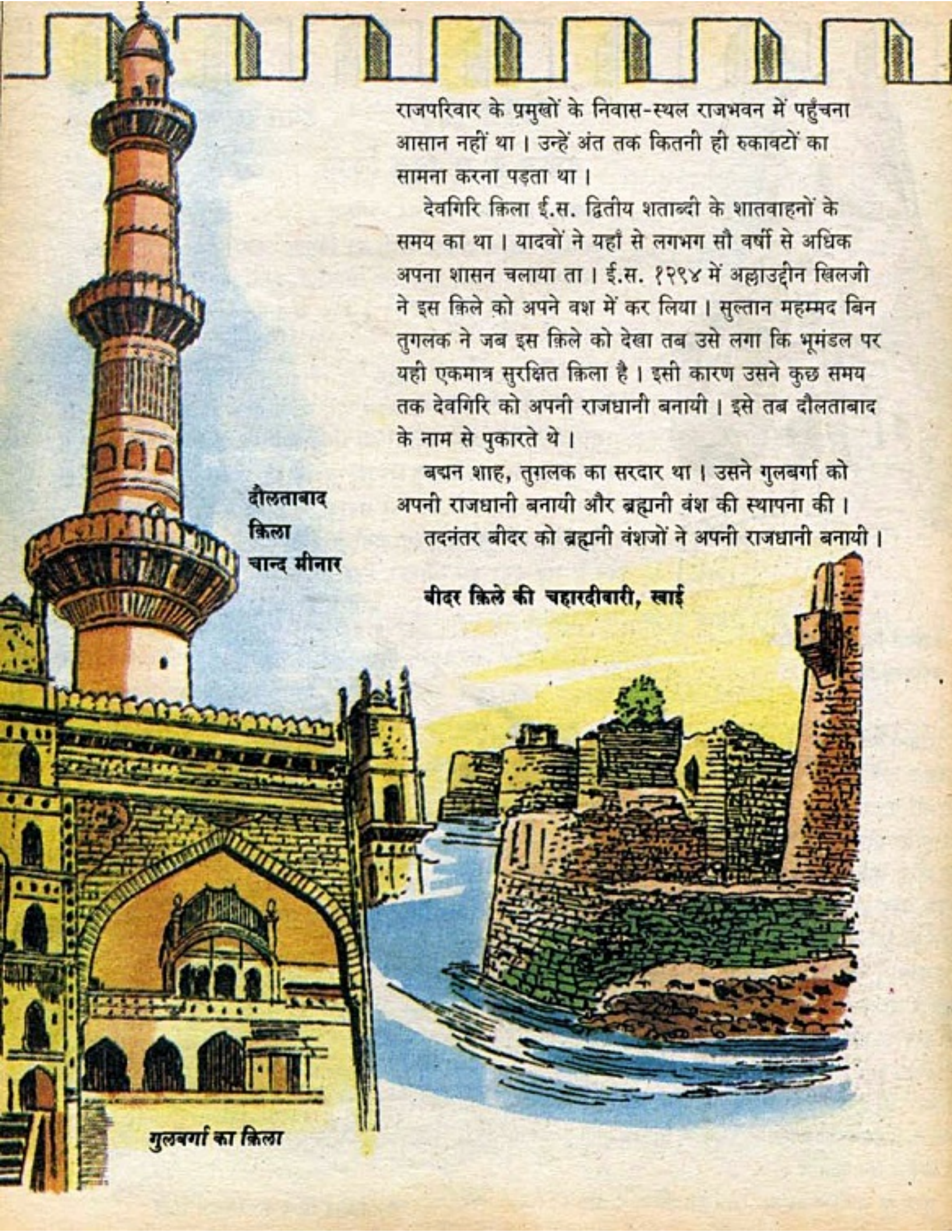
राजपरिवार के प्रमुखों के निवास-स्थल राजभवन में पहुँचना आसान नहीं था। उन्हें अंत तक कितनी ही रुकावटों का सामना करना पड़ता था।

देवगिरि क़िला ई.स. द्वितीय शताब्दी के शातवाहनों के समय का था। यादवों ने यहाँ से लगभग सौ वर्षों से अधिक अपना शासन चलाया ता। ई.स. १२९४ में अल्लाउद्दीन खिलजी ने इस क़िले को अपने वश में कर लिया। सुल्तान महम्मद बिन तुगलक ने जब इस क़िले को देखा तब उसे लगा कि भूमंडल पर यही एकमात्र सुरक्षित क़िला है। इसी कारण उसने कुछ समय तक देवगिरि को अपनी राजधानी बनायी। इसे तब दौलताबाद के नाम से पुकारते थे।

बह्मन शाह, तुगलक का सरदार था। उसने गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनायी और ब्रह्मनी वंश की स्थापना की।

तदनंतर बीदर को ब्रह्मनी वंशजों ने अपनी राजधानी बनायी।

दौलताबाद क़िला चान्द मीनार

बीदर क़िले की चहारदीवारी, खाई

गुलबर्गा का क़िला

यहाँ तीन खाइयोंवाला बहुत ही मज़बूत क़िला था।

दक्षिण भारत में मुसलमानों की अति प्राचीन इमारतें बीदर में हैं।

पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में ब्रह्मनी साम्राज्य का पतन आरंभ हुआ। १४९० में यूसफ आदिल खान ने बीजापूर छोड़ दिया और आदिल शाही वंश की स्थापना की। इस वंश का बहुत ही मशहूर बादशाह था महम्मद आदिल शाह। इसकी समाधि को गोलगुंबज़ कहते हैं। इसका गुंबज संसार के सबसे बड़े गुंबज़ों में से दूसरा है।

दूर के तालाबों और नदियों से, भूमि के

▲ गोल गुंबज़ - इस भवन में ताली बजाएँ तो दस बार से अधिक इसकी ध्वनि प्रतिध्वनित होती है। कलई में बंधी घड़ी को दीवार से लगायें हो उससे टिक टिक की जो ध्वनि निकलती है, वह सामने की दीवार से सुनायी पड़ती है।

तत्वज्ञानी, कवि, संगीतज्ञ द्वितीय इब्राहीम अली आदिल शाह से निर्मित इब्राहीम रोजा पहला है (प्रार्थना भवन) दूसरी है सुल्तान की क़ब्र। ▼
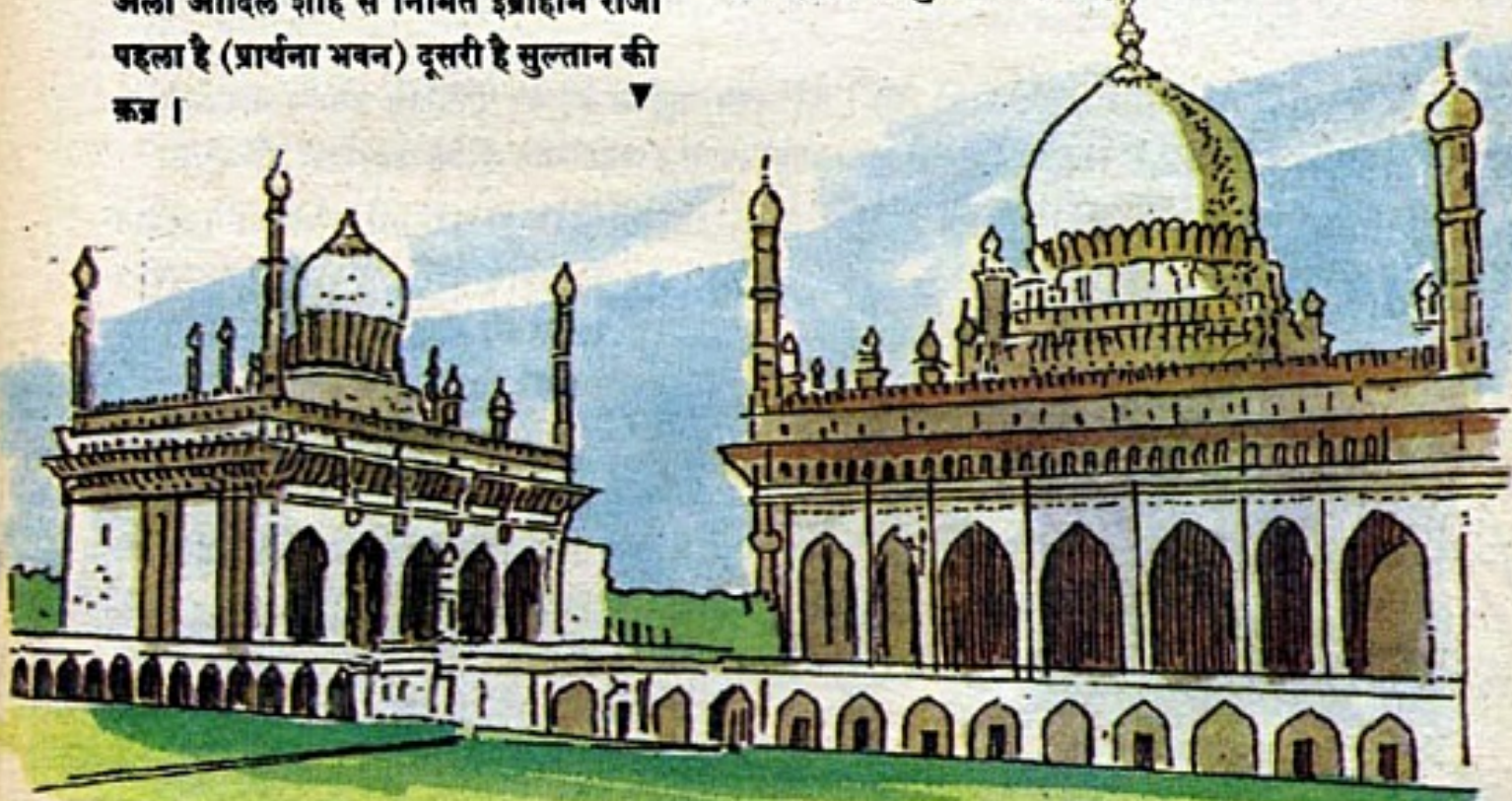
अंदर आयोजित नलियों में से क़िले में पानी लाया जाता था। इस अद्‌भुत प्रबंध को रूप दिया आदिल शाह ने ही।

अहमद निज़ाम शाह नामक एक और सरदार

अहमदनगर का क़िला

ब्रह्मनी साम्राज्य से अलग हो गया। उसने निज़ामशाही वंश की स्थापना की। इसकी राजधानी थी अहमदनगर।

दिसंबर, १५९५ में मुगलों ने अहमदनगर को घेरा। तब अपने भाई के बेटे का प्रतिनिधि बनकर चाँदबीबी शासन-भार संभाल रही थीं। उसने डटकर मुगलों का सामना किया। कहा जाता है कि जब किले की आयुध सामग्री ख़तम हो गयी तब चाँदबीबी ने ख़ज़ाने के सोने से तोपों की गोलियाँ बनवायीं। १५९६, फरवरी में जो समझौता हुआ, उसके अनुसार वहाँ तात्कालिक शांति क़ायम हुई।

चाँदबीबी

भारत के स्वतंत्रता-आँदोलन के दौरान अहमदनगर का क़िला जेल के रूप में उपयोग में लाया गया। सरदार वल्लभभाई पटेल, पंडित जवाहरलाल नेहरू, अबुल कलाम आज़ाद, आचार्य कृपलानी आदि सुप्रसिद्ध नेताओं ने इसी जेल में अपनी सज़ा भुगती। इस क़िले के जेल में रहते समय ही पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 'भारत दर्शन' नामक सुप्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की।

पिशाच और सुस्त

शिव का पिता उसके सोलहवें साल की उम्र में मर गया। शिव अक़्लमंद था, पर था बड़ा ही सुस्त।

एक दिन उसकी माँ ने उससे कहा "शिव, तुमने खेत की ओर ध्यान नहीं दिया तो वह बंजर हो जायेगा। तब तो हमारे दिन मुश्किल से गुज़रेंगे।"

शिव माँ की बातों पर चिढ़ता हुआ बोला "धूप और बारिश में खेत पर जाना मुझसे नहीं होगा। कोई दूसरा काम करना भी चाहूँ तो देनेवाला कोई भी नहीं है। छी, यह गाँव नहीं, श्मशान है।" कहता हुआ वह बाहर चला गया। उसने सोचा तक नहीं कि उसे कहाँ जाना है। जाते-जाते वह एक जंगल में घुसा।

चलते-चलते उसके पैर थक गये। वह एक इमली के पेड़ के नीचे बैठ गया। अपनी हालत पर वह रोने लगा। उसे ज़िन्दगी से चिढ़ हो गयी। उसने सोचा कि इस समय कोई जंगली जानवर या कोई पिशाच आवे और उसे खा जाए तो जीवन के इस झंझट से उसे छुटकारा मिल जायेगा।

दूसरे ही क्षण एक आवाज़ सुनायी पड़ी "यहाँ कोई जंगली जानवर नहीं है, सिर्फ़ मैं हूँ।"

शिव ने आश्चर्य से अपना सिर घुमाकर देखा। वहाँ एक पिशाच खड़ा विकट अट्टहास कर रहा था। वह उसके सामने आया और बोला "तुमने मेरे बारे में सोचा और मैं आ गया। इस पर क्या तुम्हें अचरज हो रहा है? मैं सुस्तों को बहुत चाहता हूँ।"

पिशाच को देखते ही शिव पहले तो बहुत ही डर गया, लेकिन उसे सुस्त कहने पर बहुत ही नाराज हो गया "हाँ, मैं सुस्त हूँ, तुम मेरी क्या मदद कर सकते हो?"

"तुम जो भी चाहो, दूँगा। मेरी शर्त मानोगे?" पिशाच ने पूछा।

शकुंतला कुलकर्णी

"बोलो, तुम्हारी क्या शर्ते हैं ?" शिव ने पूछा।

"छे साल मैं तुम्हारा गुलाम बनकर रहूँगा। जो भी चाहोगे, दूँगा। तुम राजा की तरह सुखों को भोग सकते हो। पर हाँ, केवल छे साल मात्र।" पिशाच ने यों कहा, मानों उसे कोई रहस्य सुना रहा हो।

"उसके बाद?" शिव ने पूछा। उसे मन ही मन शंका हो रही थी कि अवश्य ही इसमें कोई धोखा है। "इसके बाद जीवन भर तुम मेरे गुलाम बने रहोगे। तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा। किन्तु हाँ, इस बीच मैंने तुम्हारा कहा कोई काम नहीं किया तो हमारा समझौता रद्द समझो। तुम अपना रास्ता नापो, मैं अपना रास्ता नापूँगा। अगर यह तुम्हें मंजूर हो तो बोलो" पिशाच ने कहा।

शिव ने पिशाच की शर्तें मान लीं। दूसरे ही क्षण उसकी जेबें सोने की अशर्फ़ियों से भर गयीं।

"तुम्हें कभी भी जो भी चाहिये, मेरी याद करना, दे दूँगा" कहकर पिशाच ग़ायब हो गया।

शिव घर लौटा और अपनी माँ से सब कुछ बताया। उसे सोने की अशर्फ़ियाँ भी दिखायीं। अपने बेटे के पिशाच के गुलाम हो जाने के भय से वह सिहर उठी। वह रोने लगी। उससे जिद करने लगी कि इस समझौते को रद्द करो। शिव ने माँ की बात नहीं मानी। वह नाराज़ हो उठी और उसे घर से बाहर निकालकर दरवाज़ा बंद कर लिया।

शिव ने जंगल में पहुँचकर पिशाच का स्मरण किया। वह जैसे ही दिखायी पड़ा, उसने कहा "मैं इस प्रॉत को छोड़कर जंगल के किसी और प्रॉत में रहना चाहता हूँ। मेरे लिए एक सुँदर भवन, दास-दासियाँ तथा एक संदूक भर की सोने की अशर्फ़ियों का इंतज़ाम करो।"

पिशाच ने क्षण भर में उसकी माँगों को पूरा किया। एक महीना भर वह सुख भोगता रहा। फिर एक और बार उसने पिशाच का स्मरण किया। उसने उससे कहा "मुझे जंगल में घूमने के लिए एक हाथी और चार घोड़े चाहिये।"

पिशाच ने इसका भी इंतज़ाम किया। फिर

एक और महीने के बाद उसने फिर से पिशाच की याद की। वह प्रत्यक्ष हुआ तो उसने उससे कहा "मुझे संदेह है कि इस जंगल में लुटेरे और डाकू हैं। मेरे महल की रखवाली के लिए पालतू कुत्तों की तरह के चार बाघ चाहिये।"

पिशाच बाघों को ले आया और उन्हें घर के चारों ओर बाँध दिया। एक बार उसने पिशाच से कहा कि उसके महल के चारों ओर बीस फुट की दीवार खड़ी की जाए। समीप ही जो बड़े-बड़े पेड हैं, उन्हें उखाड़कर फेंकने के लिए कहा। उसने पिशाच से कहा कि भवन की पूर्वी दिशा में जो चट्टानें हैं, उन्हें उठाकर पहाड़ के शिखरों पर रखो। पिशाच को उसके बताये कामों से चिढ़ हो गयी। उसने शिव से कहा "अगर मैं जानता कि तुम मुझे इस तरह सताओगे तो तुम्हारे पास ही ना आता। याद रखना, तुम तो मेरे हाथ आनेवाले हो। उस समय गरम-गरम तेल में तुम्हें डालूँगा और फिर सुलगती आग में फेंक दूँगा। परंतु यह ना समझना कि एक ही किश्त में तुम्हें खा जाऊँगा। पैनी छुरी लेकर तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े करूँगा और छे महीनों तक सुबह और शाम नाश्ता बनाकर खाऊँगा।" दाँत चबाता हुआ, अपना क्रोध जताता हुआ, बड़ी निर्दयता से बोला।

शिव ने यह कहकर हँस दिया कि मैं तुम्हारे हाथ थोड़े ही फँसनेवाला हूँ। यों एक, दो, तीन, चार, पाँच, छे साल गुज़र गये। शिव जो भी कहता, पिशाच क्षणों में कर देता था।

छठवें साल के प्रवेश के बाद शिव को चिंता होने लगी। अपनी ग़लती का एहसास हुआ। आख़िरी रोज रात को वह भवन के सामने खड़े सोचता ही रहा। वह वहाँ से निकला और एक तालाब के पास गया। मेंढ़कों की आवाज़ों से प्रदेश गूँज रहा था। उनमें से एक मेंढ़क पानी से कूदा और उसपर आ गिरा। वह चौंककर उठने ही वाला था कि मेंढक तालाब में कूद पड़ा।

इसके होने के दूसरे ही क्षण शिव के दिमाग में एक उपाय बिजली की तरह चमक उठा। ठंडी साँस लेते हुए वह चिल्ला उठा "ऐ पिशाच, जल्दी आ।" पिशाच पेड़ों की शाखाओं से होते हुए उसके सामने आ गिरा।

शिव ने कहा ''जो काम तुम्हें सौंपनेवाला हूँ, वह तुम्हें करना होगा।'' ''हमारे समझौते के मुताबिक़ छठवें साल की समाप्ति में केवल आधा घंटा ही बाक़ी है। छे साल तक, तुम जो-जो काम बताते रहे, करता रहा। जल्दी बोलो, क्या काम है? फिर तुम्हें मैं अपना गुलाम बनाऊँगा और जैसे मैंने कहा, तुम्हें कच्चा चबा डालूँगा।'' पिशाच की बातों में प्रतिशोध की भावना स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी।

''मैं मेंढ़कों का संगीत सुनना चाहता हूँ। तालाब से नहीं। पेड़ों की टहनियों पर चढ़ जाओ। वहाँ से तालाब के मेंढ़कों को निकालकर टहनियों पर बिठा दो। फिर उनके संगीत-माधुर्य से मेरे कानों को भर दो।''

लाल-लाल आँखों से गुर्राता हुआ, शिव को देखकर पिशाच ने कहा ''अच्छा हुआ, तुमने कौवों के समूह का संगीत सुनना नहीं चाहा। मेंढ़कों के संगीत तक ही सीमित रह गये। यह भी कोई चाह है?''कहता हुआ वह तालाब में डूबा। जो मेंढ़क हाथ लगे, उन्हें पेड़ की टहनियों पर पहुँचाया। कुछ और मेंढ़कों को पकड़ने के इरादे से उसके तालाब में डूबने के पहले ही टहनियों पर पहुँचाये गये मेंढक तालाब में कूद पड़े।

पिशाच क्रोध से काँप रहा था। फिर भी उसने मेंढ़कों को पकड़ने और उन्हें टहनियों पर पहुँचाने का काम ज़ारी रखा। मेंढ़क भी टहनियों से बराबर तालाब में कूदते जा रहे थे। यों आधा घंटा बीत गया।

शिव ने उत्साह भरे स्वर में कहा ''समझौते के अनुसार, तुम मेरा कहा काम नहीं कर सके। छे सालों की मियाद भी पूरी हो गयी। हम दोनों अपनी-अपनी राह चले जाएंगे। इस क्षण से मैं सुस्ती को लात मार रहा हूँ। अपना घर लौटूँगा, खेती करूँगा और माँ की सेवा में लग जाऊँगा।'' कहकर वह वहाँ से निकल पड़ा।

पिशाच अब कर भी क्या सकता था। वह आप ही आप कहने लगा ''अरे ओ सुस्त, कितने होशियार निकले। आगे से मैं कभी भी सुस्तों से कोसों दूर रहूँगा।'' कहता हुआ वह ग़ायब हो गया।

चमन की अक़्ल

चंचलपुर के चमन का विश्वास था कि मुझ जैसा अक़्लमंद कोई है ही नहीं। लेकिन सब के सब उसे महामूर्ख कहते थे। उसकी तीव्र इच्छा थी कि मैं अपने को अक़्लमंद साबित करूँ। वह एक दिन ग्रामाधिकारी के पास गया।

ग्रामाधिकारी ने उससे कहा "गाँव के सब लोगों का कहना है कि तुम महामूर्ख हो। तुम जो भी कहो, वे विश्वास नहीं करेंगे। दूसरे गाँव के जिस अक़्लमंद को हमारे गाँव के लोग अक़्लमंद मानते हैं, उससे मिलो और उसकी मान्यता पाओ। प्रमाणित करो कि तुम अक़्लमंद हो। हाँ, यह ज़रूरी है कि वह अक़्लमंद तुम्हारी सिफारिश करे अपनी मुहर लगाये। तभी हमारे गाँव के लोग तुम्हारे अक़्लमंद होने का दावा मान सकते हैं।"

चमन दूसरे गाँव में जाने तैयार हुआ। उसी समय उस गाँव में सिद्ध नामक एक योगी आया। उसके उपदेश सुनने के लिए गाँव के लोग इकट्ठे हुए। चमन को लगा कि अगर सिद्ध योगी उसको मान जाए तो गाँव के लोग भी उसे अक़्लमंद मान लेंगे। वह भी एक दिन उसके यहाँ गया और उसके प्रवचन सुनने लगा।

सिद्ध ने उस दिन बहुत-सी विशिष्ट बातें कहीं। उसने कहा कि कौवों में सफ़ेद कौवा नहीं होता। सफ़ेद कौवे को ढूँढ़ना निरी मूर्खता है। उसने यह भी कहा कि समस्त प्राणी एक हैं, समान हैं। रावणासुर बड़ा ही बलशाली था, किन्तु क्या लाभ। परस्त्री के व्यामोह में उसका पतन हो गया। अतः दुर्गुणों से मनुष्य को दूर रहना चाहिये। इस प्रकार योगी ने बहुत ही उपदेश दिये।

चमन सिद्ध से अतिथि-गृह में मिला। उसने कहा "स्वामी, तर्कशास्त्र में मेरी बराबरी का कोई नहीं है। आज आपने जो

बातें बतायीं, उनमें से कुछ तर्कशास्त्र के दायरे में नहीं आतीं। अपने संदेहों को दूर करने के लिए आया हूँ।''

योगी ने कहा ''पूछो पुत्र।'' चमन ने पूछा ''आपने कहा था कि कौवों में सफ़ेद कौवा नहीं होता। इसका क्या प्रमाण है ?''

योगी ने कहा ''जहाँ तक मुझे मालूम है, आज तक किसी ने भी सफ़ेद कौवा नहीं देखा।''

''जहाँ तक मुझे मालूम है, आज तक किसी ने ईश्वर को नहीं देखा। तो क्या इसका मतलब है कि ईश्वर हैं ही नहीं।'' चमन ने प्रश्न किया।

''ईश्वर हैं, इस विश्वास से कितने ही प्रयोजन हैं। सफ़ेद कौवे के अस्तित्व का विश्वास करने से कोई प्रयोजन नहीं होता।'' योगी ने कहा।

इसपर चमन मुस्कुराकर बोला ''सच जानने के लिए प्रयोजन क्यों ? तर्कशास्त्र के बूते पर मैं साबित करूँगा कि सफेद कौवा है। सुनने का श्रम उठाएँगे ?''

सिद्ध योगी ने बड़े ही कुतूहल से अपना सर हिलाया। चमन ने अपना गला साफ़ करते हुए कहा ''आप ही ने कहा था कि समस्त प्राणी एक हैं, समान हैं। मनुष्यों में सफ़ेद हैं और काले भी। कुत्तों और गायों में भी हैं। ऐसी स्थिति में कौवों में क्यों नहीं होंगे, क्यों नहीं हो सकते ?''

सिद्ध ने कहा '' हो सकते हैं।''

''देखा योगिवर, मैंने अपने तर्क से प्रमाणित किया कि मेरी बातें सही हैं। आप अपनी बातें प्रमाणित नहीं कर पाये'' चमन ने कहा।

सिद्ध हँसा और कहा ''वाद-विवाद क्यों पुत्र। कोई संदेह हो तो पूछो, दूर करूँगा।''

चमन ने कहा ''रामायण की कथा सुनते हुए मुझे लगा कि रावण ही राम से अच्छा है। मुझे लगा भी कि राम बुरा है।''

''अपनी-अपनी बुद्धि के अनुरूप ही उनके विचार भी होते हैं।'' सिद्ध ने कहा। ''इसमें बुद्धि का कोई प्रभाव नहीं। योगिवर, आप सुनना पसंद करेंगे तो अपने तर्क के आधार

पर साबित करूँगा कि मैंने जो कहा, वह सच है।''

सिद्ध उसके तर्क को सुनने के लिए आतुर था।

चमन ने अपना तर्क शुरु किया ''वाल्मीकी श्रीराम के भक्त थे। उन्होंने 'रामायण' की रचना की। इसलिए श्रीराम को कथानायक बनाया और उनके शत्रु रावण को खलनायक। है ना ?''

''इनकार तो नहीं करता। किन्तु लोग श्रीराम के ही भक्त क्यों हैं और रावण के भक्त क्यों नहीं ?'' सिद्ध ने पूछा।

''रावण के भी भक्त थे और हैं। किन्तु जो युद्ध में जीतते है, उन्हीं की स्तुति होती है। वे ही बड़े माने जाते हैं। श्रीराम ने अनेकों अन्याय किये और रावण का संहार किया। वाल्मीकी से 'रामायण' रचवाकर अपने को श्रेष्ठ कहलवाया। अपनी प्रशंसा के पुल बंधवाये। तद्वारा अपने बड़प्पन का प्रचार किया।'' चमन ने कहा।

सिद्ध हँसकर बोला ''तुम बड़े अक़्लमंद हो।''

तक्षण ही चमन ने कहा ''आपने तो यह सच मान लिया, परंतु हमारे गाँव के लोग मानने को तैयार नहीं। मेरी प्रार्थना है कि आप उन सबको यह सच्चाई बतावें।''

''ठीक है। कल प्रवचन के पहले तुम्हें बुलाऊँगा। सफ़ेद कौवे तथा 'रामायण' के

बारे में तुम्हें जो मालूम है, सभी को बताना। देखते है कि तुम्हारी बातों का विरोध करने की हिम्मत कौन रखता है।'' योगी ने कहा।

चमन खुशी-खुशी घर चला गया। दूसरे दिन अपने वचन के अनुसार सिद्ध योगी ने चमन को लोगों के बीच आने को कहा। जो वह कहना चाहता था, कह चुकने के बाद योगी ने लोगों से पूछा ''क्या आपमें से कोई है, जो तर्क के आधार पर चमन की बातों का खंडन कर सके।''

कोई भी आगे नहीं बढ़ा। केवल ग्रामाधिकारी उठ खड़ा हुआ और बोला ''हमारा विश्वास है कि आप ही एकमात्र समर्थ व्यक्ति हैं जो उसकी बातों का खंडन कर सकें।''

ग्रामाधिकारी की बातें सुनकर चमन बड़प्पन महसूस करने लगा। गाँव में से कोई भी उसकी बातों का खंडन नहीं कर सका। सिद्ध योगी तो पहले ही हार चुके। इसलिए उसका विश्वास था कि योगी सबों के सामने उसके अक़्लमंद होने की घोषणा करेंगे।

योगी ने कहना शुरु किया "एक समय था जब कि चेचक के फैलने पर काली माँ को बलि दी जाती थी। कुछ अक़्लमंद लोगों ने इसे ग़लत साबित किया और उस रोग के निवारण के लिए दवा ढूँढ़ निकाली। एक समय था जब कि लोगों का समझना था कि भूमि समतल है। किन्तु कुछ अक़्लमंदों ने इसे तृटिपूर्ण धारणा बतायी। इस कारण खगोलशास्त्र के बारे में हमें कई बातें मालूम हुईं। अक़्लमंद जो भी बताएँ, विचित्र ही लगती हैं। किन्तु उनसे मनुष्य लाभ ही पाता है।"

योगी की बातों पर चमन को और घमंड हुआ। ग्रामीण बड़ी ही उत्सुकता से योगी की बातें सुन रहे थे।

सिद्ध ने आगे यों कहा "अक़्लमंदों के विचार जन-सामान्य के विचार जैसे नहीं होते। जनता उन्हें मूर्ख ही समझती है। मेरा विश्वास है कि चमन भी उनमें से एक है। शायद किसी दिन साबित हो सकता है कि इसके विचारों से संसार का कभी भला हो। तब तक तो इसे मूर्ख ही समझना चाहिये।"

इस बात पर सब ग्रामीण हँस पड़े। चमन ने नाराज़ होकर कहा "मुझे मूर्ख निर्धारित करने से क्या होता है। अक़्ल हो तो तर्क कीजिये और मेरे वाद का खंडन कीजिये।"

सिद्ध मुस्कुराता हुआ बोला "अक़्लमंद का गुण है कि वह मूर्ख से वाद-विवाद पर ना उतरे। मैं और इस गाँव के लोग अब इस समय इतनी ही अक़्लमंदी दिखा सकते हैं।"

ग्रामीण और ज़ोर से हँस पड़े। चमन का घोर अपमान हुआ। इसके बाद कभी भी उसने अपनी अक़्लमंदी के प्रदर्शन की चेष्टा नहीं की।

द्रुपद का भेजा ब्राह्मण पॉडवों के पास आया और उनसे कहा "हमारे राजा ने आपके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए मुझे यहाँ भेजा है। हमारे राजा पॉडु राजा के निकट मित्र हैं। अपनी पुत्री का विवाह अर्जुन से करने की उनकी तीव्र इच्छा थी। कृपया आप अपने कुल और गोत्र के विवरण दीजिये।"

धर्मराज ने उस ब्राह्मण का सत्कार किया और उसे बिठाकर कहा "आपके राजन् का हमारे कुल-गोत्र से क्या वास्ता? उन्होंने घोषणा की थी कि मत्स्य-यंत्र को गिराने वाले से अपनी पुत्री का विवाह करूँगा। हमारे भाई ने उस कार्य को संपन्न किया और राजकुमारी से विवाह किया। मैं समझता हूँ कि आपके राजा की इच्छा पूरी हुई।"

इतने में पॉडवों को ले आने के लिए द्रुपद के भेजे रथ आये। सब पॉडव अलग-अलग रथों में बैठ गये। कुन्ती और द्रौपदी एक रथ में आसीन हुईं। रथ राजधानी पहुँचे। द्रुपद ने उनके लिए अनगिनत भेंटें भेजीं। जो भेंटें क्षत्रियोचित थीं, उन्ही को पॉडवों ने ग्रहण किया और शेष भेंटों को अस्वीकार किया। द्रुपद ने उनको देखा और मन ही मन निश्चय किया कि ये अवश्य ही क्षत्रिय हैं।

वे एक मंडप में समाविष्ट हुए। द्रुपद ने धर्मराज की तरफ़ मुड़कर कहा "महोदय, हमें मालूम नहीं कि आप कौन हैं? जब तक हम जान नहीं पायेंगे कि आप कौन हैं, तब तक अपनी पुत्री का विवाह शास्त्रोक्त

पद्धति में नहीं कर पायेंगे ।''

तब धर्मराज ने सच कह दिया । यह जानते ही कि द्रौपदी को जीतनेवाला अर्जुन ही है, और कोई नहीं तो द्रुपद की आँखों में आनंद के आँसू भर आये । उसने कहा ''तुम लोगों का लाख के गृह से बच जाना मेरा सौभाग्य है । मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हें तुम्हारा राज्य वापस लौटाऊँगा ।''

कुन्ती, पाँडव तथा द्रौपदी के रहने का प्रबंध हुआ । उन्हें एक सुँदर भवन में रखा गया । वहाँ वे सुख से रहने लगे । दृपद ने उनसे कहा कि थोड़े दिनों के अंदर शुभ मुहूर्त निकालकर अर्जुन का विवाह द्रौपदी से करवाऊँगा ।

धर्मराज ने कहा ''यह कैसे संभव होगा ? मैं और भीम अर्जुन से बड़े हैं । हम अविवाहित हैं ।''

दृपद ने कहा ''तब तो अपनी पुत्री कृष्णा का विवाह तुम्हीं ही से होगी ।''

''आपकी पुत्री रत्न है । रत्न को कोई भी स्वीकार कर सकता है । पर हमारी माता के मुँह से जो बात निकली है, उसके हम बद्ध हैं । इसलिए हम पाँचों आपकी पुत्री से विवाह करेंगे '' धर्मराज ने कहा ।

इस बात से दृपद स्तंभित रह गया । उसने कहा ''एक पुरुष अनेकों स्त्रीयों से विवाह रचा सकता है, किन्तु एक स्त्री का पाँच पुरुषों से विवाह रचाना कैसे संभव है ? ना ही कभी सुना और ना ही कभी देखा । इसके बारे में मैं, तुम, कुन्ती तथा धृष्टद्युम्न मिलकर कल चर्चा करेंगे और किसी निर्णय पर पहुँचेंगे ।'' कहकर दृपद ने उस संबंध में चर्चा बंद कर दी ।

उस समय पर हिरण की खाल धारण किये कृष्णद्वैपायन वहाँ आये । सबने उनका स्वागत किया और उनकी पाद-पूजा की । उन्हें उचित आसन पर बिठाया और स्वयं बैठ गये ।

द्रुपद ने कृष्णद्वैपायन से कहा ''महात्मा, धर्मराज धर्म के सब नियमों से सुपरिचित है । फिर भी इसका कहना है कि मेरी पुत्री से ये पाँचों भाई विवाह करेंगे । आप सब विषयों

में पारंगत हैं। क्या किसी भी युग में किसी स्त्री का विवाह अनेकों पुरुषों से हुआ है ? यह तो धर्म-विरुद्ध है ना ?''

धर्मराज ने तक्षण ही कहा ''मेरे मुंह से अधर्म की बात कभी नहीं निकलती। जब हम सब मिलकर आपकी पुत्री से विवाह करने पर सन्नद्ध हैं तब आपको क्यों आपत्ति हो ? आप निश्चिंत होकर यह विवाह करवाइये ? हमारे लिए यह हमारी माता की आज्ञा है। माता की आज्ञा का पालन करने से बढ़कर उत्तम धर्म क्या हो सकता है ? पूर्व परिपाटियों को ही लीजिये। गौतमी के वंश में जन्मी जटिला नामक मुनिकन्या ने सात पुरुषों से विवाह नहीं किया ? दाक्षायणी नामक मुनिकन्या प्रचेत नामक दस मुनियों की धर्मपत्नी हुई। यह सब हमने पुराणों में पढ़ा और जाना भी है।''

धृष्टद्युम्न ने एक और प्रकार की आपत्ति उठायी। उसने पूछा ''अर्जुन ने स्वशक्ति से द्रौपदी को जीता। ऐसी द्रौपदी से धर्मराज व उसके भाइयों का विवाह क्या अनुचित नहीं ? मेरी बहन कृष्णा कैसे पाँचों की पत्नी बन सकती है?''

कुन्ती ने आग्रह किया कि उसकी बात खाली नहीं जानी चाहिये। कृष्णद्वैपायन ने कुन्ती को धैर्य देते हुए द्रुपद से कहा ''राजन, धर्मराज का कहा अधर्म नहीं है। कुन्ती की इच्छा भी असंगत नहीं है। इन पाँचों भाइयों से अपनी पुत्री का विवाह कराओ।''

उपरांत वे द्रुपद को एकांत में ले गये और द्रौपदी के जन्म-वृत्तांत की कथा यों बतायी।

पूर्व माधल्य नामक एक मुनि की इंद्रसेना नामक पत्नी थी। माधल्य कोढ़ का रोगी था। इसलिए वह पति से किसी प्रकार का सुख नहीं पा पायी। अशांत मर गयी। अगले जन्म में उसका जन्म काशी राजा के यहाँ हुआ। उस जन्म में वह अपूर्व सुँदरी थी। फिर भी उसे योग्य पति नहीं मिला। इसपर वह बहुत चिंतित होकर परमेश्वर के साक्षात्कार के लिए घोर तपस्या करने लगी।

एक दिन परमेश्वर प्रत्यक्ष हुए और उससे पूछा कि कहो, तुम्हें क्या चाहिये ?

उसने बड़ी आतुरता से पति, पति, पति, पति, पति कहकर पाँच बार दुहराया।

परमेश्वर ने उसे वर दिया कि अगले जन्म में पाँच महापुरुष तुम्हारे पति होंगे।

काशी के राजा की पुत्री ने परमेश्वर से विनती की कि अगर अगले जन्म में मेरे पाँच पति हों तो ऐसा वर दीजिये कि मैं पाँचों पतियों की सेवा समान रूप से कर पाऊँ और सबको समान रूप से सुखी रख पाऊँ।

वह अब द्रौपदी बनकर जन्मी है और परमेश्वर के दिये वर के अनुसार पाँचों पाँडवों की पत्नी बननेवाली है।

कृष्णद्वैपायन ने, द्रुपद को असली बात बतायी और विशद रूप से समझाया भी कि पूर्व काल में भी ऐसे विवाह होते थे। उन्होंने एक उदाहरण भी बताया। उन्होंने कहा कि नितंत नामक एक राजर्षि के पाँच पुत्र थे। उनके नाम थे साल्वेय, शूरसेन, श्रुतसेन, सार, अतिसार।

पाँचों बहुत ही स्नेह से रहा करते थे। उन पाँचों भाइयों ने मिलकर उशीनर की राजकुमारी अजिता से विवाह किया। पाँचों से संतान भी हुई। यह आचार तो पूर्वकाल में भी प्रचलित था।

जब व्यास कृष्णद्वैपायन ने स्वयं अपनी स्वीकृति दी, और इस प्रस्ताव का समर्थन किया तब द्रुपद के संदेह दूर हो गये। उसने पाँचों पाँडवों से अपनी पुत्री के विवाह की स्वीकृति सहर्ष दी।

उसी दिन शुभ-मुहूर्त था। चंद्र पुष्यमी नक्षत्र में मिला हुआ था। इसलिए कृष्णद्वैपायन ने कहा कि पाँडवों का विवाह द्रौपदी से उसी दिन संपन्न हो तो अच्छा होगा। द्रुपद तुरंत विवाह के प्रबंधों में लग गया। कांपिल्य नगर केले के पेड़ों और कच्ची सुपारी के गुच्छों से सजाया गया। बरगद के कोमल पत्तों से तोरण बाँधे गये। चंदन में मिश्रित पानी से सब घरों के सामने के स्थल को पोता गया। कर्पूर तथा मोतियों से रंगोली सजायी गयी। संपूर्ण नगर का

अलंकार हुआ। भीड से खचाखच भरी हुई थी हर जगह। जहाँ देखो, वहाँ पुष्पमालाएँ थीं। मंगल वाद्य प्रतिध्वनित हो रहे थे। द्रुपद के भवन की पूर्वी दिशा में विवाह-मंडप बना। मंडप बहुत ही मनमोहक रंग से सजाया गया। उसके स्तंभों पर हरे रंग के वस्त्र बाँधे गये। मोतियों तथा पुष्पों की मालाएँ लटकायी गयीं। सोने से बनी वेदिका पर अग्नि कुंड का प्रबंध हुआ। सुवर्ण कलशों में पुण्य नदियों का जल लाया गया।

पाँचों पाँडवों ने मंगल स्नान किया और उत्तम वस्त्र पहने। अपने को अलंकृत करके द्रौपदी अपनी सहेलियों के साथ आयी। दौम्य ने मंत्रोच्चारण के बाद पहले द्रौपदी और धर्मराज को बिठाया। शास्त्रोक्त रूप से उनका पाणिग्रहण कराया। तदनंतर भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव ने भी उसी प्रकार द्रौपदी से विवाह रचा।

द्रुपद ने अपने पाँचों दामादों को पृथक-पृथक कितने ही मूल्यवान आभूषण, धन, रथ, अश्व, हाथी, दासियाँ, गायें भेंट में दीं। द्रुपद को मन ही मन लगा कि पाँडवों के दामाद होते हुए देवता भी उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे।

विवाह की प्रथा की पूर्ति के बाद द्रौपदी अंत:पुर में लौट आयी। कुन्ती शीर्ष आसन पर स्त्रीयों के मध्य आसीन थी। द्रौपदी ने वहाँ आकर अपनी सास को साष्टांग नमस्कार किया। हाथ जोड़कर विनयपूर्वक खड़ी हो गयी। अपनी बहू को देखकर कुन्ती बहुत ही प्रसन्न हुई और उसे हृदयपूर्वक आशीर्वाद दिया।

जैसे ही श्रीकृष्ण को मालूम हुआ कि पाँडवों का विवाह संपन्न हुआ है, मूल्यवान भेंटें लेकर आया। पाँडव, कृष्ण के साथ कुछ दिन कांपिल्य नगर में रहे और समस्त सुखों को भोगने में रत हो गये।

द्रौपदी के स्वयंवर के दिन अर्जुन ने ही मत्स्य-यंत्र को गिराया, शल्य को हरानेवाला कोई और नहीं, भीम ही था। पाँडव लाख-गृह में मरे नहीं, बल्कि जीवित ही हैं और कुन्ती सहित सुरक्षित हैं, आदि सारी बातें प्रजा व राजाओं को मालूम हो गयीं।

दुर्योधन को भी यह बात मालूम हुई। पाँडवों के भाग्य पर वह मन ही मन कुढ़ने लगा। तब दुश्शासन ने अपने भाई से कहा "ब्राह्मण का वेष नहीं धरता तो क्या, द्रौपदी अर्जुन को प्राप्त होती ? अगर हमें ज्ञात होता कि वह ब्राह्मण नही, बल्कि अर्जुन ही था तो क्या हम इतनी आसानी से उसे छोड़ देते? अब पछताने से क्या होगा ? सच है कि बाहुबल से दैवबल अधिक है। उनकी विजय में दैवबल का बड़ा हाथ रहा।" वे उस पुरोचन को गालियाँ देने लगे, जिसे उन्होंने पाँडवों को लाख-गृह में जला डालने के लिए नियुक्त किया था।

पूरा विवरण पाकर विदुर बहुत ही प्रसन्न हुआ। वह धृतराष्ट्र के पास गया और उसे पाँडव-द्रौपदी के विवाह के विवरण दिये। मालूम नहीं, क्या अज्ञात कारण था, धृतराष्ट्र को लगा कि द्रौपदी का विवाह अपने पुत्र दुर्योधन के साथ हुआ तो अति आनंदित हुआ। उसने विदुर को आज्ञा दी कि मेरी बहू द्रौपदी को रत्नाभरण तथा उत्तम वस्त्र भेजो। उसे तक्षण हस्तिनापूर ले आओ।

विदुर को लगा कि धृतराष्ट्र ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया और वे भ्रम में हैं तो उसने पुनः पूरा विवरण देते हुए कहा "द्रौपदी का स्वयंवर हुआ अर्जुन से। सुना है कि पाँचों पाँडवों ने उससे विवाह किया है।"

धृतराष्ट्र ने इस बार ध्यान से सुना और अपने को संयमित रखते हुए विदुर से कहा "तो क्या हुआ ? सच कहा जाए तो मैं दुर्योधन से बढ़कर पाँडवों को ही अधिकाधिक चाहता हूँ। वे अभूतपूर्व पराक्रमी हैं। वे बड़ों का कितना आदर करते हैं और उनकी कितनी सेवाएँ करते हैं। उचित और अनुचित वे ही जानते हैं। द्रुपद से अपना नाता जोड़कर अब वे और बलवान हो गये हैं। उनके जीवित होने का समाचार पाकर मुझे बहुत आनंद हुआ।"

विदुर ने कहा "राजन्, आपकी बुद्धि सदा ऐसी ही हो।"

- सशेष

मुर्गे-मुर्गियाँ

चमन नामक एक आदमी इमली का बेंत लेकर दस साल के अपने बेटे को मारे जा रहा था और चिल्लाये जा रहा था। उस रास्ते से गुज़रते हुए धर्मदास ने यह देखा और उससे बेंत खींच लिया। फिर उससे पूछा "छोटे लड़के को यों क्यों पीट रहे हो?"

"साहब, आप जानते नहीं। यह कितना बड़ा शैतान है। आप रास्ते से हट जाइये। मैंने कितनी ही बार इससे कहा था कि टोकरी के नीचे जो मुर्गे और मुर्गियों हैं, उन्हें छोड़ना मत। पर यह सुनता ही नहीं।" चमन ने और नाराज़ होते हुए कहा।

"यह तो अभी छोटा बच्चा है। मुर्गे-मुर्गियों को अगर इसने आज़ाद भी कर दिया तो क्या हुआ? थोड़े ही कोई गिद्ध उन्हें उड़ाकर ले गया या किसी कुत्ते ने उन्हें दबोच लिया?" धर्मदास ने चमन को समझाने की कोशिश की।

"ऐसा तो कुछ नहीं हुआ पर आप जानते नहीं कि क्या हो जायेगा। पहले वह बेंत मुझे दे दीजिये" कहता हुआ वह अपने बेटे की ओर गुर्राते हुए देखने लगा।

धर्मदास को, चमन की बातें बेकार लगीं। उसने कहा "चमन, शांत हो जाओ। इधर-उधर घूमने के बाद वे तो तुम्हारे ही यहाँ लौट आयेंगे। फिर भी क्यों इस तरह आग-बबूला हो रहे हो?"

"सब थोड़े ही वापस आयेंगे। उनमें से सिर्फ़ दो ही मेरे हैं। बाकी अपने-अपने मालिकों के घर लौट जायेंगे।" चमन ने सच उगल दिया।

धर्मदास असली बात जान गया। उसने कहा "अच्छा, इसके पीछे यह राज़ है। हाल ही में गाँव के बहुत-से लोगों के मुर्गे-मुर्गियाँ गायब हो गये हैं। उनमें से कुछ मेरे भी हैं। चलो, ग्रामाधिकारी के पास चलते हैं। वे भी परीक्षा करेंगे कि तुम्हें कितनी बार मारने से यह बेंत टूट जायेगा।" कहता हुआ वह चमन को ग्रामाधिकारी के पास खींचकर ले गया।

-भार्गवी

'चन्दामामा'
परिशिष्ट - ८२

हमारे देश के
वृक्ष

लीची

बहुत पहले की बात है। चीन के एक कवि का नगर-बहिष्कार हुआ। वे कांटन भेज दिये गये। वहाँ उन्हें हर दिन आहार के रूप में लीची फल दिये गये। उस समय उन्होंने कहा "इस प्रकार हर रोज़ लीची फल खाने के लिए दिये जाएँ तो अजीवन बहिष्कार के लिए भी मैं तैयार हूँ। बड़े ही आनंद से इस बहिष्कार का स्वागत करूँगा।" कहते हैं कि लीची, पूर्व बौद्धयुग में चीन से हमारे देश में लायी गयी है। विहार के मुजाफिर, पश्चिम बंगाल के हुगली, उत्तर प्रदेश के देहरादून, पंजाब के गुरुदासपुर, तमिलनाडु के नीलगिरि जिलों में लीची के बाग़ों को पनपाते हैं। इस लीची के उत्पादन में हमारे देश का स्थान तीसरा है।

यह पेड़ हमेशा हरा दीखता है। १२ मीटरों तक इसकी वृद्धि होती है। टहनियाँ सीधी होती हैं। पत्तों के ऊपरी भाग चिकने होते हैं। टहनियों के कोनों में लटकनेवाले छोटे-छोटे फूल गुच्छों में फलते हैं। फल अंडाकार में गुच्छों में फलते हैं। फलों का रंग लाल होता है। कुछ कोमल हरे रंग में भी होते हैं। ऊपर का छिलका खुरदरा होता है। इस छिलके को निकालने पर जो बीज होता है, उसके चारों ओर नरम गूदा होता है। वह बहुत ही मीठा होता है। इसमें अधिक मात्रा में बी,सी,डी के विटामिन हैं। उत्तर भारत में जून और दक्षिण भारत में अप्रैल-मई महीनों में यह फलता है। इसके बीज ही नहीं, बल्कि जड़ें, छालें तथा फूल भी औषधियों के गुण रखते हैं।

हमारे देश के ऋषि : ६

भृग

हमारे देश में, कुछ वंशों के नाम सुप्रसिद्ध ऋषियों के नामों से जुडे हुए होते हैं। इस प्रकार भार्गव कहलाये जानेवाले, भृग वंश के माने जाते हैं।

भृग प्राचीन काल के महान ऋषियों में से थे। उन्होंने पूजा के योग्य भगवान को ढूँढ़ निकाला और अन्य मुनियों को मार्ग दिखाया।

एक बार वे विष्णु का दर्शन करने वैकुंठ गये। तब महाविष्णु योग निद्रा में थे। भृग थोड़ी देर वहाँ उनके जागने की प्रतीक्षा में बैठे रहे। किन्तु विष्णु नहीं जगे। वे इस बात पर बहुत ही क्रोधित हुए कि इतने बड़े तपोसंपन्न मुनि की उपस्थिति की परवाह महाविष्णु ने जान-बूझकर नहीं की। वे अपना विवेक खो बैठे। स्थितिकारक महाविष्णु ऐसी योगनिद्रा में पड़े रहें तो सृष्टि का क्या होगा? यो सोचकर वे आवेगपूर्ण क्रोध में आ गये और महाविष्णु के वक्षस्थल पर लात मारी। इंद्रियों पर उनका संपूर्ण वश था, परंतु क्रोध के कारण एक क्षण के लिए उन्होंने अपनी विचक्षण-शक्ति खो दी और साधारण मानव की तरह व्यवहार किया।

निद्रा से जगे विष्णु क्रोधित नहीं हुए। उन्होंने भृगु से क्षमा माँगी। अतिथि-सत्कार ना कर पाने की अपनी त्रुटि पर उन्होंने दुख प्रकट किया। वे उस पाँव को उठाकर मृदुता से दबाने लगे कि कहीं उस पाँव को चोट तो नहीं लगी, जिससे भृग ने उनके वक्षस्थल पर लात मारी थी। महाविष्णु के शांत और विनय से भृग आश्चर्य से अवाक् रह गये। अपने व्यवहार पर उन्हें पश्चात्ताप हुआ। उन्होंने मुनियों को बताया कि शांत व सत्यस्वरूपी महाविष्णु ही पूजा के योग्य हैं। वे ही जन्म-मरण के मुक्तिदाता हैं।

भृग ने घोषणा की कि अग्नि को आहुति देने पर मलिन पदार्थ भी निर्मल हो जाते हैं। मनुष्यों के भूत, भविष्य तथा वर्तमान को बतानेवाला 'भृग संहिता' नामक उनका रचा एक ज्योतिष-ग्रंथ भी है। इस ग्रंथ से विदित होता है कि भृगु महर्षि ज्योतिष-शास्त्र में कितना प्रकांड पांडित्य रखते हैं।

च्यवन, शुक्र, जमदग्नि, परशुराम, वाल्मीकी आदि सुप्रसिद्ध मुनि भार्गव वंश के ही थे।

क्या आप जानते हैं?

१. सम्राट अशोक ने अपने सर्वप्रथम शासन की घोषणा कब की ?
२. किस देश को 'पेगोडों (मंदिर) का देश कहते हैं ?
३. हमारे देश के किन प्रांतों में एशियायी जंगली गधे पाये जाते हैं ?
४. अमेरीका में दो प्रधान राजनैतिक दल हैं। उनका क्या नाम है ?
५. वह 'टेस्टमाच' कहाँ हुआ, जिसमें एक भी दौड़ लिये बिना भारत ने चार विकेट खो दिये ?
६. पंखहीन पक्षी का क्या नाम है ?
७. संयुक्त राष्ट्र संघ की सर्वप्रथम भारतीय महिला अध्यक्षा कौन थीं ?
८. फुटबाल में १,००० गोल्स सर्वप्रथम किसको मिले ?
९. चोलों की राजधानी का क्या नाम है ?
१०. अंग्रेज़ों और फ्राँसीसियों में दस सालों तक हमारे देश में युद्ध होता रहा। उस युद्ध का क्या नाम है ?
११. महम्मद गज़नी ने हमारे देश पर कब हमला किया ?
१२. वह प्रदेश कौन-सा है, जहाँ से लोक-सभा के लिए अधिकतर सदस्य चुने जाते हैं ?
१३. ताजमहल के समीप प्रवाहित होनेवाली नदी का क्या नाम है ?
१४. आग्रा के समीप स्थित फतेपूर सिक्री नगर की स्थापना किसने की?
१५. द्वितीय चंद्रगुप्त का सुप्रसिद्ध नाम क्या है ?
१६. सबसे अधिक मांसाहारी जंतु कौन-सा है ?
१७. भारत में सर्वप्रथम पोलियो क्लब की स्थापना कहाँ हुई ?
१८. वे कौन आक्रामक हैं, जो पहले पहल हमारे देश में तोप ले आये ?

उत्तर

१. ई.पू. २१६ वें वर्ष में
२. बर्मा (मियानमार)
३. गुजरात के कच्च प्रदेश में
४. डेमाक्रटिक दल : रिपब्लिकन दल
५. १९५२, इंग्लैंड में
६. न्यूजलान्ड के किवी पक्षी
७. विजयलक्ष्मी पंडित
८. आस्ट्रिया में जन्म लिया और जर्मनी के पक्ष में खेलनेवाले खिलाड़ी प्रांज बेंडर
९. तंजावूर
१०. कर्नाटक युद्ध
११. ईसवीं सदी १०००-१०२६ के बीच। लगभग सत्रह बार।
१२. उत्तरप्रदेश
१३. यमुना नदी
१४. बादशाह अकबर
१५. विक्रमादित्य
१६. पोलार रीछ
१७. आसाम, १८५९ में, कचार क्लब
१८. बाबर

सही दंड

हेलापुरी के धनीराम और काशीराम बहुत बड़े सुस्त थे। तकलीफ़ उठाकर काम करना उन्हें क़तई पसंद नहीं था। गाँव के सब लोग इन दोनों निकम्मों के बारे में अच्छी तरह जानते थे। इसलिए वे दोनों पड़ोस के गाँवों में चले जाते और वहाँ किसी के घर में कोई शुभ कार्य संपन्न हो रहा हो तो भरपेट खाकर लौटते थे।

दोनों एक बार दुपहर को एक गाँव पहुँचे। वहाँ के एक घर के दीवार पर से जूठन के पत्ते फेंके जा रहे थे। दोनों ने सोचा "विवाह का भोजन होगा।" बस, धनीराम और काशीराम झट घर के अंदर घुस गये। उस समय परोसने के लिए नारियल के पत्ते बिछाये जा रहे थे। दोनों आसन जमाकर पंक्ति में बैठ गये।

वहाँ एक आदमी अतिथियों के स्वागत तथा उनके भोजन के प्रबंध का काम संभाल रहा था। वह ग़ौर से देख रहा था कि आवश्यक पकवान सब परोसे जा रहे हैं या नहीं। उसने उन दोनों को संदेह से देखा। बड़े विनय से उसने पूछा "कृपया बतायेंगे कि आप कौन हैं?"

धनीराम ने फ़ौरन जवाब दिया "मैं दुलहन के ससुर का बहनोई हूँ।" काशीराम ने कहा "क्या आप जानते नहीं, मैं दुलहे के चाचा का छोटा दामाद हूँ?"

उस आदमी ने चिल्लाकर "पहले इन दोनों चोरों को सड़क पर फेंक दो।" बस चार नौकर आये और जूठन के पत्तों की तरह उन्हें भी दीवार पर से फेंक दिया।

अपने बदन को सहलाते हुए धनीराम ने पूछा "काशीराम, हम से यह ग़लती कैसे हो गयी? हम निशाना कैसे चूक गये?"

"उस आदमी ने हमें जो गालियाँ दीं, तुमने सुनी नहीं? जो दावत हो रही है, वह घर के मालिक के पिता के श्राद्ध के सिलसिले में हो रही है।" काशीराम दर्द से कराहता हुआ बोला। - राजीव पाठक
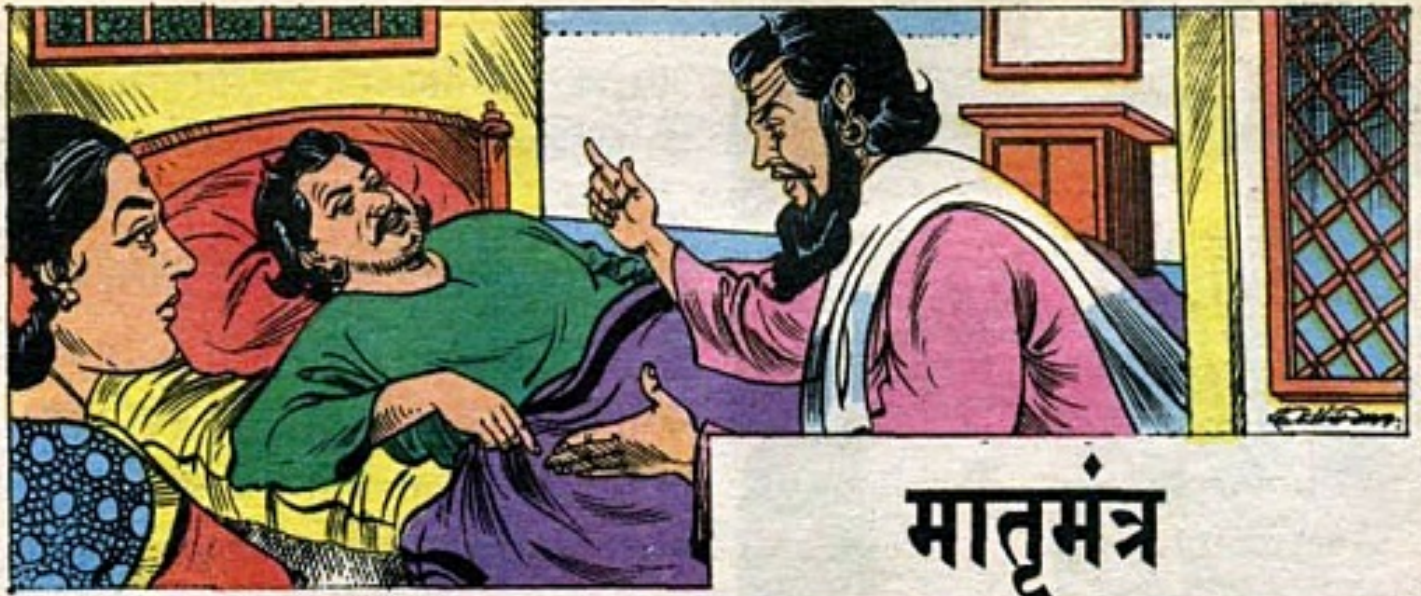
मातृमंत्र

सीतापति और रुक्मणी आदर्श दंपति थे। उनके तीन बेटे थे। एक-एक में एक-एक साल का फ़रक था। जब बड़ा लड़का बीस साल का हुआ, तब सीतापति किसी विचित्र रोग का शिकार बना। वह खाट पर लेटा रहता था। तब वह चालीस साल का था और पत्नी रुक्मिणी तीस साल की थी।

रुक्मिणी ने अपनी जिम्मेदारी को बड़ी ही निष्ठा से निबाहा था। उसने अपने पति की सेवा में कोई क़सर नहीं रखी थी। उसकी यही एकमात्र चाह थी कि पति संतुष्ट व स्वस्थ रहें। उसके तीनों बेटे भी अपने माता पिता को बहुत चाहते थे। कभी भी वे अपने माता-पिता के दिलों को दुखाते नहीं थे। यद्यपि उसके पति ने कोई ख़ास संपत्ति नहीं कमायी, फिर भी रुक्मिणी कभी भी अपने पति से इसकी शिकायत नहीं करती थी। उसका उद्देश्य था कि यह सब भाग्य का खेल है। प्रारब्ध में जैसा लिखा है, वैसा ही होगा।

अब रुक्मिणी अपने अस्वस्थ पति की हालत पर बहुत घबड़ा गयी। उसने कभी भी सोचा तक नहीं था कि जीवन में ऐसी दुखमय परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। भगवान से वह प्रार्थना करती रही कि मेरे पति को इस अज्ञात व आकस्मिक रोग से बचाओ।

कितने ही वैद्यों ने सीतापति की जाँच की। किसी की भी समझ में नहीं आया कि आख़िर वह बीमारी है क्या? आख़िर, हिमालय से आये एक योगी ने उसे देखकर कहा "यह रोग नहीं है। पूर्व जन्म में तुम्हारे पापों का फल है। मेरे साथ हिमालयों में आओ। वहाँ जड़ी-बूटियाँ खाओ और तपस्या करो। तुम्हारा रोग शनैः शनैः दूर होता जायेगा।"

सीतापति ने पूछा "हिमालयों में मुझे कब तक रहना पड़ेगा?" "तुमने एक भले परिवार को तोड़ा था। तुम्हारी वजह से वह हरा-भरा

सुभद्रा बी.

अब तक ठीक-ठाक रहा, तो इसमें तुम्हारे पति का कोई बड़प्पन नहीं। पिछले जन्म में तुमने जो पुण्य किया, उसका यह फल है।'' योगी ने रुक्मिणी को समझाया। सीतापति रोग से बहुत ही पीडित था। उसने निर्णय किया कि ऐसे जीने से तो अच्छा यही है कि हिमालय चला जाऊँ। पर वह अपनी पत्नी रुक्मिणी के बारे में बहुत ही व्याकुल था। उसके बिना क्या अपने बेटों के साथ वह सुखी रह सकेगी ? बेटों की शादी हो जाए तो क्या वे ठीक तरह से माँ की देखभाल करेंगे ? उसने पत्नी और बेटों के लिए विशेष रूप से कुछ बचाया भी नहीं था। ऐसी कोई ख़ास संपत्ति भी नहीं थी।

सीतापति के संशयों व विचारों को योगी ने भली-भांति भाँप लिया। उसने सोच-विचारकर कहा ''तुम्हारे बेटे अपनी माँ की अच्छी तरह से देखभाल करें, इसका एक उपाय है।''

सीतापति उस उपाय को जानने के लिए आतुर था। तब योगी ने बच्चों तथा रुक्मिणी को भी बुलाकर कहा ''तुमसे एक मुख्य विषय कहना है। बीस सालों का जो ऋण तुममें और सीतापति में था, चुक गया। वह मेरे साथ हिमालयों में आ रहा है। अब वह अपनी पत्नी के बारे में बहुत ही व्याकुल है। उसका अपने पति के साथ हिमालयों में आना निषिद्ध है। अलावा इसके, बेटों को भी उसकी आवश्यकता है।''

रुक्मिणी ने पहले इसके लिए अपनी स्वीकृति

परिवार छिन्नाभिन्न हो गया। उस पाप ने तुम्हारे शरीर में प्रवेश किया है। तुम्हें बीस साल हिमालयों में रहना होगा।'' योगी ने कहा।

तब सीतापति की पत्नी रुक्मिणी ने हस्तक्षेप करते हुए कहा ''मुनिवर, इस जन्म में जान-बूझकर उन्होंने कोई पाप नहीं किया। परिवार की देखभाल बड़े ही प्यार से की है। अपने से जितना हो सके, लोगों की मदद की। बीस सालों तक हम सबसे दूर रहने के लिए कहना क्या न्याय-संगत है ?''

''पूर्व जन्म का पाप मनुष्य को नहीं छोड़ता। इसीलिए मनुष्य को चाहिये कि हर जन्म में वह पुण्य-कार्य करे। इस जन्म का पुण्य, अगले जन्म में काम आयेगा। आपका परिवार

नहीं दी। किन्तु योगी के समझाने पर मान गयी कि सीतापति का रोग कितना गंभीर है। तीनों बेटों ने भी अपने पिता को वचन दिया ''हम माँ की देखभाल अच्छी तरह से करेंगे । आप निश्चिंत होकर हिमालयों में जाइये और स्वस्थ बनकर लौटिये।''

तब योगी ने उनसे कहा ''मैं तुम तीनों को मातृमंत्र का उपदेश दूँगा । हर रोज़ यह मंत्र पढ़िये और माँ की पूजा कीजिये। एक भी क्षण माँ के दिल को दुखाना नहीं चाहिये। उसके कहे अनुसार करना होगा । भक्ति और श्रद्धापूर्वक पाँच सालों तक जो ऐसा करेंगे, उन्हें दस लाख रुपयों की निधि प्राप्त होगी । किन्तु यह काम इतना सुलभ नहीं। ऐसा करने जो सन्नद्ध हों, उनके पास माँ रहेगी।''

''माँ का हृदय पवित्र है। माँ में स्वार्थ नहीं होता। माँ जो भी करती है, अपनी संतान की भलाई के लिए ही करती है । आपके कहे अनुसार मैं माँ की पूजा करूँगा। माँ मेरे ही पास रहेगी।'' बड़े लड़के ने कहा।

बाक़ी दीनों ने भी योगी से यही कहा।

योगी क्षण भर सोचने के बाद बोला ''परंतु इस पूजा को सबों को एक साथ नहीं करना चाहिये। एक-एक करके करना होगा। इसलिए माँ प्रथम पाँच साल बड़े बेटे के साथ रहेगी। बाद के पाँच साल दूसरे बेटे केसाथ रहेगी। क्या तुम्हें स्वीकार है ?''

''माँ जैसा चाहे, करे। वह जो भी कहेगी,

हमें स्वीकार है'' चारों ने मुक्तकंठ से कहा।

''माँ रुक्मिणी, तुम भाग्यशाली हो। तुम्हारे बेटे रत्न हैं'' योगी ने बेटों की भरपूर प्रशंसा की।

फिर भी रुक्मिणी दुखी थी। योगी ने यह देखकर बेटों को वहाँ से जाने को कहा। उनके चले जाने के बाद योगी ने पूछा कि उसकी व्याकुलता का कारण क्या है ?

रुक्मिणी ने कहा ''योगिवर, बेटे अभी छोटे हैं। अब तो वे कहेंगे ही कि माँ उत्तम है, महान है। पर, बड़े हो जाने के बाद एक दूसरे से झगड़ा करेंगे। मनमुटाव होगा। इसी को लेकर मैं दुखी हूँ। आप तो जानते ही हैं कि हमारी कोई संपत्ति नहीं। मैं अगर बड़े लड़के के साथ रह जाऊँ तो बाक़ी का क्या होगा ?''

"माँ रुक्मिणी, पाँच सालों तक तुम्हारा बेटा तुम्हारी खींची लकीर को पार नहीं करेगा। बाक़ी दोनों बेटों को भी अपने ही साथ रख। भाइयों के बीच स्नेह-मैत्री को बढ़ा। बाकी तीनों को इस तरह तैयार करो, जिससे वे अपने पैरों पर खुद खड़े हो सकें।

पाँच सालों के बाद बड़े लड़के को दस लाख की निधि मिलेगी। इससे दूसरा बेटा भी तुम्हारी देखभाल बड़ी श्रद्धा-भक्ति से करेगा। तब बाक़ी को अपने साथ रख सकती हो।"

"योगिवर, आपका कहा ठीक ही है। इस प्रकार मेरा बड़ा लड़का जब पच्चीस वर्ष का हो जायेगा, दस लाख रुपयों की निधि उसे मिलेगी। जब दूसरे लड़के को दस लाख मिलेंगे, तब उसकी उम्र होगी सैंतीस। यह तो उसके साथ अन्याय हुआ ना?" सीता ने अपनी वेदना प्रखट की। योगी ने हँसकर कहा "तुम तो अपने बेटों के भविष्य के बारे में ही सोच रही हो। इसलिए ऐसा बोलने पर बाध्य हो रही हो। माँ के साथ रहकर जीने से बढ़कर बच्चों का और कोई भाग्य नहीं होता। वह लाखों की पूँजी के समान है। धन मिलते ही अगर बड़ा लड़का तुम्हें छोड़कर चला जाए तो भाग्य शेष का है। इसे उनका दुर्भाग्य मत कहो।"

"योगिवर, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मेरे चारों बच्चों को भाग्य एकसाथ वरे।" रुक्मिणी ने पूछा।

योगी ने अपना मौन तोड़ते हुए कहा "माते, भाग्य उनके हाथ में है। किन्तु जो प्रबंध मैंने किया इससे बीस सालों तक वे तुम्हारी देखभाल बड़ी श्रद्धा से करेंगे। यह तुम्हारे लिए प्रधान है। तुम्हारा पति भी सुख-शांति से हिमालयों में रहेगा। बीस सालों के बाद पुनः तुम दोनों का मिलन होगा। मैंने ऐसा जो प्रबंध किया, इसका कारण है। क्योंकि तुम और चालीस सालों तक जीवित रहोगी।" रुक्मिणी ने तृप्त होकर अपना सर हिलाया। उसके मुख से व्याकुलता थोड़ी-सी घट गयी। बाद योगी ने तीनों बेटों को अपने पास बुलाया और कहा "माता-पिता; संतान, सदा एक साथ रहें, इससे बढ़कर और कोई धन नहीं होता।" कहकर उसने उन्हें मातृमंत्र का उपदेश दिया।
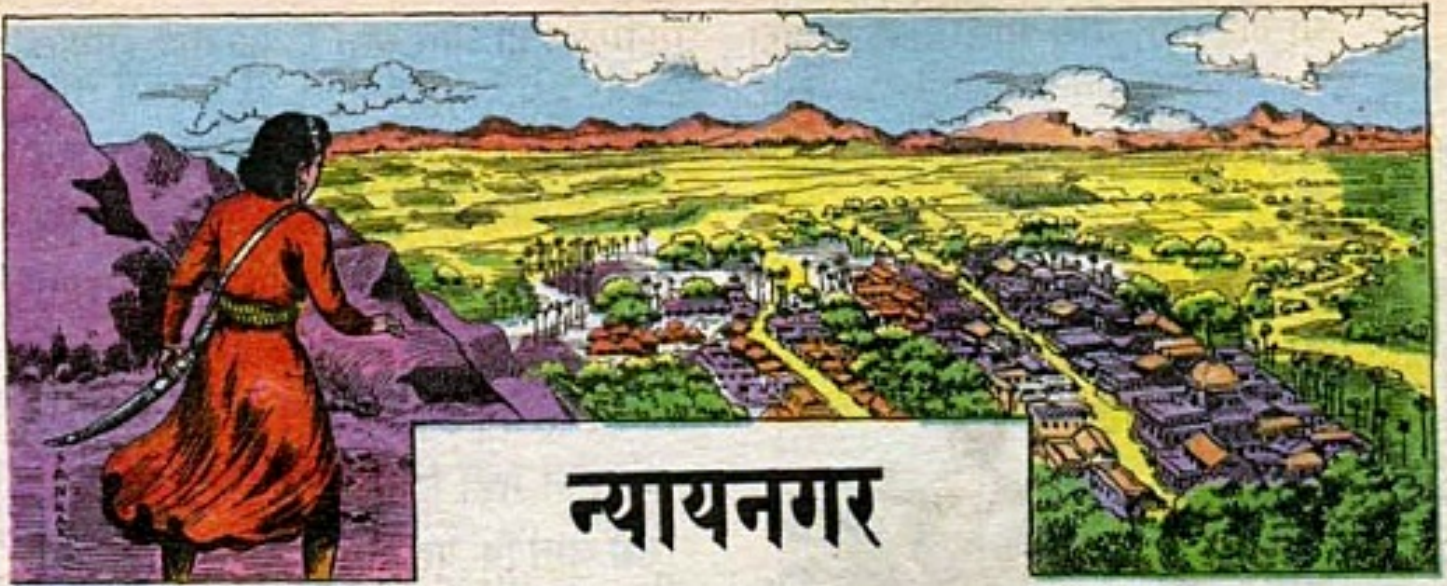
न्यायनगर

बहुत पहले की बात है। मिथिलानगर में यशवर्धन नामक एक क्षत्रिय कुमार था। वह बड़ा ही पराक्रमी और साहसी था। पर था बड़ा ही क्रोधांध। वह किसी से ड़रता नहीं था। जो चाहता, करता था। उसकी दुष्टता से लोग तंग आ गये थे। पाप करने में वह झिझकता नहीं था। कोई उसका विरोध करे तो उसका सर तलवार से काट देता था।

कुछ समय के बाद उसके पाप के अंत का समय समीप आ गया। एक दिन राजा के साले से उसकी मुठभेड़ हुई। दोनों ने तलवारें निकालीं। राजा का साला तलवार उठाकर उसपर वार करे, इसके पहले ही यशवर्धन ने उसकी छाती में तलवार भोंक दी। राजा को जब यह समाचार मिला, तो वह बहुत ही क्रोधित हुआ। उसने सिपाहियों को आज्ञा दी कि यशवर्धन पकड़ा जाए और उसका सर उड़ा दिया जाए।

जीवित रहना हो तो नगर छोड़कर चले जाने के अलावा यशवर्धन के सामने और कोई चारा नहीं था। घोड़े पर चढ़कर वह भागने लगा। कोसों दूर जाने के बाद घोड़ा रुक गया और दिल के रुक जाने से वह वहीं का वहीं ढ़ेर हो गया।

यशवर्धन को लगा कि अब देश की सीमाओं को पार करने के लिए और बहुत दूर तक भागना होगा। उसे लग रहा था कि सैनिक अब भी उसका पीछा कर रहे हैं। डर के मारे वह भागता ही रहा। भूख-प्यास से तड़पता हुआ वह जंगलों और पहाड़ों से होता हुआ भागने लगा। सबेरा होते-होते वह पर्वत के एक शिखर पर पहुँच गया। उसने वहाँ थोड़ी देर विश्राम किया। उसे विश्वास हो गया कि अब कोई उसका पीछा नहीं कर रहा है; ख़तरे से खाली है। उसने पहाड़ के नीचे देखा तो तराई में उसे एक सुंदर नगर दिखायी

पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

पड़ा।

उस नगर को देखते ही यशवर्धन की जान में जान आयी। क्योंकि आज तक उसने कभी भी सुना नहीं था कि उसके देश में ऐसा भी एक सुँदर नगर है। उसे लगा कि यह किसी दूसरे देश का नगर होगा। वहाँ वह सुख से रह सकता है और आराम की ज़िन्दगी गुज़ार सकता है। ऐसा सोचकर वह नीचे उतरने लगा। बीच रास्ते में उसे एक चरवाहा मिला। उसने उससे पूछा कि दीखनेवालो उस नगर का क्या नाम है।

चरवाहे ने कहा "न्यायनगर"।

यशवर्धन ने निर्णय कर लिया कि यह अवश्य ही दूसरे देश का नगर है। यह नगर नया ही नहीं था बल्कि विचित्र भी था। उसने नगर में प्रवेश किया और विशाल गलियों और ऊँचे महलों के बीच में से होता हुआ पैदल जाने लगा। गलियों में कितने ही पुरुष और स्त्रीयाँ आ-जा रहे थे। कुछ लोग ठहरकर आपस में बातें कर रहे थे। उनमें से कोई भी उसे अस्वस्थ या बलहीन नहीं लगा।

उसे लगा कि यह कोई पुण्य नगर है। यहाँ तो कोई भी दुखी नहीं दीखता। वह एक दुकान के पास आया। उसने वहाँ एक विचित्र दृश्य देखा। जब दुकानदार ग्राहकों से बातें करने में मशगूल था, तब एक युवक ने दुकान से किसी चीज़ की चोरी की। फिर वह चुपचाप गली में जाने लगा, मानों उसे कुछ भी मालूम ही नहीं। चार क़दम भी उसने बढ़ाया नहीं कि इतने में ज़ोर की आवाज़ हुई। उस युवक के पैरों के नीचे की भूमि फट गयी और वह युवक अंदर चला गया। फिर तक्षण ही भूमि यथावत् जैसी की तैसी हो गयी।

यशवर्धन अपनी आँखों के सामने होते हुए इस दृश्य को देखकर स्तंभित रह गया। उसने जान लिया कि यह दृश्य उसीने केवल नहीं देखा, बल्कि वहाँ उपस्थित सब लोगों ने देखा। परंतु उन्हें उसकी तरह आश्चर्य नहीं हुआ। वे सिर्फ़ एक क्षण के लिए रुक गये और चल पड़े। लगता था कि उन्हें ऐसे दृश्यों को देखने की आदत पड़ गयी है।

जल्दी ही यशवर्धन की समझ में आ गया

कि इस नगर में लोग ऐसे ही मरते हैं। और दूसरी जगहों पर भी कितने ही लोगों का, भूमि में समा जाना, उसने आँखों देखा था। दूसरों के साथ अन्याय करनेवालों के पैरों के नीचे की ज़मीन फटती थी और वे भूमि में धँस जाते थे। ऐसे अन्यायी, पापी, दुष्टों की ही ऐसी मृत्यु होती थी। एक बार एक आदमी रास्ते पर जा रहा था। किसी दूसरे आदमी ने पीछे से उसकी पीठ में छुरी भोंकनी चाही। बस, उसके पैरों के नीचे की ज़मीन फट गयी और वह भूगर्भ में चला गया। एक जगह पर चार आदमी भागती हुई एक स्त्री को पकड़ने के लिए दौड़ते हुए आ रहे थे, बस चारों के पैरों के नीचे की ज़मीन फट गयी और वे सब भूमि के अंदर चले गये। भूमि पुनः वंद हो गयी।

इन विचित्र मृत्युओं पर सोचता हुआ यशवर्धन एक जगह पर खड़ा हो गया। मन ही मन वह बड़बड़ाने लगा "यह मालूम होते हुए भी कि भूमि इनके पापों को क्षमा नहीं करेगी तो इस नगर के लोग पाप क्यों करते हैं? क्या वे उस क्षण भूल जाते हैं कि उनकी मौत निश्चित है।"

समीप ही से एक आवाज आयी "पुत्र, तुम किस प्रदेश के हो?" चौंककर यशवर्धन मुड़ा और उसने देखा कि वहाँ एक साधु खड़ा है।

यशवर्धन ने कहा "मैं मिथिलानगर का हूँ।"

"तुम्हारी मिथिला में मृत्यु क्या कहकर आती है? क्या वहाँ के लोग अकस्मात नहीं मरते? मौत के भय से क्या वे पाप नहीं करते?" साधु ने पूछा।

बस, यशवर्धन की आँखें खुल गयीं। उससे किये गये सारे पाप-कृत्य उसे याद आ गये। उसे पछतावा हुआ। वह साधु के पाँवों पर गिरा "साधुवर, मैं भी एक पापी हूँ। मृत्यु से बचने के लिए ही इस नगर में आया हूँ। अब जान गया हूँ कि बचना मृत्यु से नहीं; बल्कि पाप से है। मुझे पुण्य-मार्ग का उपदेश दीजिये।"

साधु ने यशवर्धन को पुण्यमार्ग, धर्म व नीति का उपदेश दिया।

Say "Hello" to text books and friends
'Cause School days are here again
Have a great year and all the best
From Wobbit, Coon and the rest!

SUPER
RUBBER
It's time to go back to school again. Time for text books. Time for games. Time to meet old friends. And make new ones. Time to start studying again. Because there's so much to learn about the world around you.
From all of us here at Chandamama, have a great year in school. And remember to tell us what you've learnt everyday, when you come home from school !
THE
CHANDAMAMA
OLLECTION
ARTIG1246
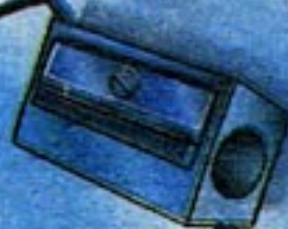
फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, नवंबर, १९९५ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

MAHANTESH C. MORABAD

MAHANTESH C. MORABAD

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० सितंबर, '९५ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

जुलाई, १९९५, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **करो मछली का शिकार**

दूसरा फोटो : **पर हो पौधों से प्यार**

प्रेषक : **रमेश काम्बले**

कालेज रोड, विद्यानगर, ब्रह्मपुरी पो. चंद्रपुरी जि. महाराष्ट्र पिन - ४४१ २०६.

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु ६०/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

अपने प्यारे चहेतें के लिए जो हो दूर सुदूर
है न यहाँ अनोखा उपहार जो होगा प्यार भरपूर

चन्दामामा

प्यारी-प्यारी सी चंदामामा दीजिए उसे उसकी अपनी पसंद की भाषा में—
आसामी, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल या तेलुगु
—और घर से अलग कहीं दूर रहे उसे लूटने दीजिए घर की मौज-मस्ती

चन्दे की दरें (वार्षिक)

आस्ट्रेलिया, जापान, मलेशिया और श्रीलंका के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 117.00 वायु सेवा से रु. 264.00

फ्रान्स, सिंगापुर, यू.के., यू.एस.ए.,
पश्चिम जर्मनी और दूसरे देशों के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 123.00 वायु सेवा से रु. 264.00

अपने चन्दे की रकम डिमांड ड्रॉफ्ट या मनी ऑर्डर द्वारा
'चन्दामामा पब्लिकेशन्स' के नाम से निम्न पते पर भेजिए:

सर्क्युलेशन मैनेजर, चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

पारले पॉपिन्स के रैपर भेजिए, धमाकेदार उपहार पाइए.

मुफ्त पारले पॉपिन्स के 20, रैपर भेजने पर शरारत भरा पज़ल किट. पारले पॉपिन्स के 10 रैपर भेजने पर फन पेड और जंगल बुक स्टिकर. पारले पॉपिन्स के 4 रैपर भेजने पर जंगल बुक स्टिकर.

* *पॉपिन्स इस भेंट के बिना भी मिलता है.*

अब फलों के नए-नए स्वाद में

जल्दी करो

उपहार बहुत कम हैं.

डाक टिकट लगे लिफाफे पर अपना नाम और पता लिखें और पारले पॉपिन्स के खाली रैपर के साथ इस पते पर भेजें. पॉपिन्स पॉइन्ट, पी. ओ. बॉक्स 907, बम्बई-400 057.

फ्रूट जूस या पल्प सहित,
अतिरिक्त फ्लेवर सहित.

everest/94/PP/186-hn